श्री गणेशाय नमः

श्री श्याम देवाय नमः श्री हनुमते नमः

श्री श्याम भजन गंगा

भाग - १५

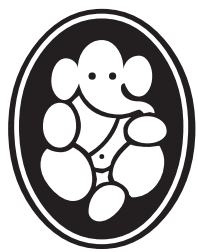

:रचयिता:

विनोद अग्रवाल ''हर्ष''

पंजीकृत आजीवन सदस्य

दी फिल्म राईटर्स एसोसियेशन, मुम्बई

दूरभाष (मो॰) : 9831295444, 9339224155

Web : www.vinodagrawalharsh.com

श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : बरसां सुं यो दिन आयो...)

आओ गणनायक आओ, भगतां को मान बढ़ाओ,
बेगा पधारो म्हारे आँगणा, ओ देवा...।। टेर ।।

ऊँचे सिंहासन देवा, ''आप बिराजो जी''-२
किर्तन में आन पधारो, ''ले गाजो बाजो जी''-२
पहल्याँ म्हें थाने बुलावाँ, चोखा सा सुगण मनावाँ,
आओ पधारो म्हारे बारणा, ओ देवा...।। १ ।।

रिद्ध-सिद्ध ने सागे देवा, ''थे लेता आज्यो जी''-२
भगतां का आके सगला, ''विघ्न मिटाद्यो जी''-२
थारा म्हें लाड लडावाँ, लड्डुवन को भोग लगावाँ,
आओ पधारो म्हारा पावणा, ओ देवा...।। २ ।।

पगल्यां में थारे देवा, ''घुंघरा बंधाज्यो जी''-२
छम छम, छमा छम, छम छम ''नाच दिखाज्यो जी''-२
''हर्ष'' उडिके आवो, नाचो सगला ने नचाओ,
साज सुरीला बाजे बाजणा, ओ देवा...।। ३ ।।

श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : सूरज कब दूर गगन से...)

हमने दरबार सजाया, ऊँचा आसन लगवाया,
पहला न्योता स्वीकारो, गणपत जी आन पधारो,
कीर्तन में ओ देवा आ जाओ, बाधायें मिटा जाओ ।। टेर ।।

श्याम प्रभु का प्यारा, ये श्रृंगार सजाया,
खाटुजी से चल कर, मेरा बाबा आया,
कीर्तन की है तैयारी, तेरे आने की बारी,
कीर्तन में ओ देवा...।। १ ।।

सेठ श्याम की घर में, पावन ज्योत जली है,
आनन्द है हर दिल में, मन की कली खिली है,
हमने तो अरज लगाई, भगतों की करो सुणाई,
कीर्तन में ओ देवा...।। २ ।।

बाधायें सब दूर करो, कीर्तन सफल बनाओ,
''हर्ष'' हमारे मन में, भगती भाव जगाओ,
रखो अब मान हमारा, शिव पार्वता का प्यारा,
कीर्तन में ओ देवा...।। ३ ।।

श्री गुरु वन्दना

(तर्ज : ये गोटेदार लहंगा...)

अच्छे कर्मों से गुरुवर, मिला तेरा प्यार है,
दुनिया झुकती है आकर, ये वो दरबार है ।। टेर ।।

गुरुवर तेरे वेष में हमने, ''गोविन्द दर्शन पाया''-२
उस मालिक को क्या देखें जब, ''देखा तेरा साया''-२
मिलता है ज्ञान खजाना, ये वो भण्डार है ।।
दुनिया झुकती है... ।। १ ।।

सत्संग रूपी नाव बिठाकर, ''आप ही पार उतारें''-२
काम क्रोध मद लोभ मिटाकर, ''जीवन आप संवारे''-२
खोटे का खरा बना दे, ये वो औजार है ।।
दुनिया झुकती है... ।। २ ।।

जननी हमको जन्म है देती, ''आप बनाते काबिल''-२
श्री चरणों में मिले आपके,'' ''हर्ष'' हमारी मंजिल''-२
सच की राहों पे चलती, ये वो सरकार है ।।
दुनिया झुकती है... ।। ३ ।।

श्री गुरु वन्दना

(तर्ज : तेरे बिन श्याम हमारा...)

लूट ले खजाना, गुरु के दरबार में ।। टेर ।।

धन से तो मन का, सुख नहीं मिलता,
वो तो मिलता है, गुरुजी के प्यार में ।। १ ।।

ज्ञान बिना तेरे, जीवन में अंधेरा,
मिलेगा उजाला, इस ज्ञान के भण्डार में ।। २ ।।

बहुत बड़ा, परिवार है लेकिन,
बीता जाये जीवन, ये आपसी तकरार में ।। ३ ।।

सतगुरु की तु, शरण में आजा,
''हर्ष'' भटकता है, काहे तू बेकार में ।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : तेरा जाना दिल के अरमानों...)

तेरा द्वारा, जटा जूट गंगाधर जग में है न्यारा,
जटाओं से-२, हरपल बहती निर्मल जलधारा ।। टेर ।।

रहते हो तुम कहाँ कहाँ, बर्फानी हिम शिखर जहाँ,
तेरा डेरा वहाँ वहाँ, आ ऽऽऽ
जंगल पर्वत यहाँ वहाँ, मैदानों में जहाँ तहाँ,
ध्याये तुमको ये जहाँ ।।
तेरा द्वारा... ।। १ ।।

गरमी सर्दी या सावन, भीगा रहता है आँगन,
जलधारा बहती पावन, आऽऽऽ
जल के थपेड़े सहते हो, हरपल हँसते रहते हो,
जल ही जीवन कहते हो ।।
तेरा द्वारा... ।। २ ।।

वैद्यनाथ मैदानी है, भूतनाथ शमशानी है,
अमरनाथ बर्फानी है, आऽऽऽ
सोमनाथ सागर तट पे, विश्वनाथ गंगा तट पे,
''हर्ष'' बसेरा घट घट में ।।
तेरा द्वारा... ।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : दिखादे सांवली सूरत...)

निराली शान है तेरी, निराले ढ़ंग तेरे हैं,
लगी मरघट की डमरूधर, ये भष्मी अंग तेरे है ।। टेर ।।

तू पहने आक की माला, ''धतूरे का ही भोजन है''-२
बड़ी श्रद्धा से सेवकगण, चढ़ाये भंग तेरे है ।।
निराली शान है...।। १ ।।

न गरमी की तुझे परवाह, ''न सर्दी की कोई चिन्ता''-२
हमेशा जल चढ़े तुझपे, अनोखे रंग तेरे हैं ।।
निराली शान है...।। २ ।।

सजे हैं तन पे बाघम्बर, ''हरिण की छाल बैठन को''-२
वो राजा नागों का बाशक, गले में संग तेरे है ।।
निराली शान है...।। ३ ।।

वो शीतल चाँद सी चितवन, ''वो मुख पे तेज सूरज का''-२
''हर्ष'' पावन वो अमृत सी, जटा में गंग तेरे है ।।
निराली शान है...।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : वो जब याद आये बहुत याद आये...)

मेरे भोले दानी, शरण तेरी आया,
कैसे बताऊँ, तुमको दयालु,
जमाने ने कितना मुझको सताया ।। टेर ।।

देख दिल पे लगे मेरे कितने जखम,
बाबा मैंने सहे हैं सितम पे सितम,
बेटे पे बाबा, करुणा दिखा दे,
मेरे घाव तुमको, मैं दिखाने आया ।।
मेरे भोले दानी...।। १ ।।

मैं भरोसा जमाने पे करता रहा,
ये जहाँ हर घड़ी मुझको छलता रहा,
निभाने के लायक, नहीं थे जो रिस्ते,
उन्हे भी यहाँ पर, मैंने निभाया ।।
मेरे भोले दानी...।। २ ।।

मेरा नजरों के आगे हुआ सब यहाँ,
ये मेरी भूल थी चुप रहा क्युँ सदा,
तेरा ''हर्ष'' तेरे, सन्मुख विधाता,
पिछली वो भूलें, भुलाने मैं आया ।।
मेरे भोले दानी...।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : दिल दिवाने का डोला...)

मेरा भूतेश्वर के द्वारे पे हर काम हो गया,
मैं तेरी शरण जो आया तो, आराम हो गया ।। टेर ।।

फिरता था मारा मारा, मुझे मिला ना कोई द्वारा,
दर दर की ठोकर खाई, ना दिया किसी ने सहारा,
मैं गर्दिश के जीवन से, परेशान हो गया ।।
मेरा भूतेश्वर...।। १ ।।

ना किसी ने बाँहे पकड़ी, ना किसी ने राह दिखाई,
क्या करुं कहाँ पे जाऊं, पड़ता ना मुझे सुझाई,
जब भूतनाथ बाबा का, फरमान हो गया ।।
मेरा भूतेश्वर...।। २ ।।

चौखट पे शीश झुकाया, बाबा ने मुझे अपनाया,
कहे ''हर्ष'' दयालु तुमने, मेरे सिर पे हाथ फिराया,
तेरे चरणों का मैं सेवक, सरे आम हो गया ।।
मेरा भूतेश्वर...।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : मेरे हाथों में नौ - नौ चूड़ियाँ...)

मैया गोरां की भोले जी से जंग हो गई,
देखो सौतन भवानी तेरी भंग हो गई,
हिमालय पे अरे देखो, बड़ी हुड़दंग हो गई ।। टेर ।।

भोले डमरु तुम्हारा डम डम बाजे,
हाथों चिमटा ले साधुओं के संग नाचे,
कहीं सुलफा, है हाथों में, कहीं चिलम साजे ।।
भोले डमरु ...।। १ ।।

काहे इतनी चढ़ाई नाथ भंग तूने,
कैसा हुलिया बनाया बेढंग तूने,
वो मुखड़े का, उड़ा डाला, मैया का रंग तूने ।।
काहे इतनी...।। २ ।।

सोचे मैया क्युँ नाथ तेरी बात मान ली,
तेरे कहने से काहे आज भांग छान ली,
नहीं घोटुँ, दुबारा मैं, बलम ये गांठ बांध ली ।।
सोचे मैया ....।। ३ ।।

''हर्ष'' जानुं ये हठ तेरी झूठी है,
गौरां रानी क्युं आज ऐसे रुठी है,
तेरी मेरी, अरे जोड़ी, बड़ी अनूठी है ।।
''हर्ष'' जानुं ...।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : तुझे सूरज कहूँ या चन्दा...)

हे अजर अमर अविनाशी, कण कण के हो तुम वासी,
इस दीन हीन बालक पे, कर दया तु आज जरा सी,
आओ भोलेनाथ, भोलेनाथ...।। टेर ।।

तेरी चौखट से त्रिपुरारी, कोई खाली हाथ न आया,
श्रद्धा से जो भी मांगा, अपनी झोली में पाया,
ये महर दया करणा तो, चरणों की तेरे दासी ।।
इस दीन हीन...।। १ ।।

तू दयावान है कितना, भूलों पर ध्यान न देता,
हम गलती करते जाते, फिर भी दामन भर देता,
चाहे बैद्यनाथ कोई जाये, कोई जाये चाहे काशी ।।
इस दीन हीन...।। २ ।।

हरदम देते ही रहना, ना लेने की अभिलाषा,
तेरे ''हर्ष'' ने जाना ये ही, परमेश्वर की परिभाषा,
ये गमन आगमन मेटो, काटो ये लख चौरासी ।।
इस दीन हीन...।। ३ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(स्वरबद्ध : श्री प्रवीण बेदी -मो०-९८३०४३२६६९)

अगर माँ देना हो, भवानी देना ये सौगात,
धन दौलत ना मांगू मैया, दे जनमों का साथ ।। टेर ।।

जनम जनम की सेवा देदे, आज मुरादें पूरी करदे,
हर हालत में तुमको ध्यावुँ, रखलो मेरी बात ।।
अगर माँ...।। १।।

अन्तर्यामी हे जगदम्बा, छुपा ना तुमसे हाल हमारा,
महर करो माँ शैरोवाली, रखदो सिर पे हाथ ।।
अगर माँ...।। २ ।।

अटल छत्र पे रहने वाली, अपनी छत्तर छाया दे दे,
तेरे होते कहलाये क्युँ, बेटा तेरा अनाथ ।।
अगर माँ...।। ३ ।।

''हर्ष'' भला क्या माँगे मैया, बिन माँगे जब तू देती है,
अपने भगत के माता रानी, पूरे कर जज्बात ।।
अगर माँ...।। ४ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(स्वरबद्ध : श्री प्रवीण बेदी -मो०-९८३०४३२६६९)

देखले दातिये तू, गौर से हाल मेरा,
तेरे होते बता क्युँ, बेटा बदहाल तेरा ।। टेर ।।

मैं अकेला नहीं माँ, लोग सारे ये कहते,
माँ के पावन आँचल में, बच्चे महफूज रहते,
दुःख भला पा रहा क्युँ, आज ये लाल तेरा ।। १।।

आज बेचैनियों में, घिर गया हुँ भवानी,
खोल कर कान अपने, सुनले मेरी कहानी,
कैसा विपदा का आया, तूफां ये टाल मेरा ।। २ ।।

लाल तकलीफ पाये, माँ को ये नहीं गवारा,
मेरी हालत पे अब तक, क्युँ ना सोचा विचारा,
फिरा के हाथ सिर पर, बदल दे भाल मेरा ।। ३ ।।

''हर्ष'' की सुन भवानी, मेरा उद्धार करदे,
पड़ा हुँ चरणों में माँ, मुझे भी प्यार करले,
हाथ तूने जो थामा, होगा अहसान तेरा ।। ४ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज : फूलों सा चेहरा तेरा...)

नव दुर्गा, आई यहाँ, अश्विन के नवरातों में,
रास रचो झूमके, गरबा करो घूम के,
झिलमिल सी रातों में ।। टेर ।।

ऊँचे सिंहासन, अम्बे विराजे, माँ के चरण तुम पखारो जरा,
ममतामयी माँ, है शेरों वाली, अनुपम ये झाँकी निहारो जरा,
प्यारी सी, मेहन्दी रची, मैया के हाथों में ।।
रास रचो झूमके...।। १ ।।

नजरें उतारो, लेवो बलाई, नारियल ध्वजा माँ को भेंट करो,
साँची शरण है, श्रद्धा से सारे, चरणों में माता के शीश धरो,
छम छम छम, पायल बजे, मैया के पाँवो में ।।
रास रचो झूमके...।। २ ।।

आओ करें हम, मैया का स्वागत, ''हर्ष'' मिलन की बेला है ये,
नाचो नचाओ, खुशियाँ मनाओ, नौ दिन का प्यारा सा मेला है ये,
सोणा सा, कजरा सजे, मैया की आँखों में ।।
रास रचो झूमके...।। ३ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज : सारा प्यार तुम्हारा मैंने...)

है बैकुण्ठ हजारो छुपे, माँ तुम्हारे आँचल में,
तेरी करुणा रुपी धारा को, हम पीते हैं माँ पल पल में ।।

प्यारी सी ये सूरत, खिल जाता है
देख के इसको, मन का ये मधुवन,
ममता की तू मूरत, तु जो आई धन्य हुआ है, मेरा ये आँगन,
ममता की तु मूरत,
हो ऽऽऽ, चमका मेरी किस्मत का तारा, माँ तेरे आने से ।।
है बैकुण्ठ हजारो...।। १ ।।

हम प्यार तेरा पायेगें, हमें साथ तेरा माँ भायेगा,
चरणों में बिछ जायेगें हम, घर रोशन हो जायेगा,
दूर कभी ना होना, पल भर की भी दूरी तुमसे सह ना सकेगें हम,
दूर कभी ना होना,
छाँव तु रखना ''हर्ष'' के सिर पे, अपने इस आँचल की ।।
है बैकुण्ठ हजारो...।। २ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

(तर्ज : मेरे हाथों में नौ-नौ....)

बोलो किसने किया है सिणगार दादी,
प्यारा लागे, ये तेरा दरबार दादी,
बलैया लुं, माँ जाऊँ मैं, तेरी बलिहार दादी ।। टेर ।।

चान्दी चौकी पे मैया को बिठाया है,
टीका रोली का माथे पे लगाया है,
वो फूलों का, ये गजरा माँ, मेरे मन भाया है ।। चान्दी चौकी ... ।। १ ।।

माथे चुनड़ी सितारों वाली सोहे है,
हाथों मेहन्दी सभी का मन मोहे है,
लो सुध सारी, तेरे बेटे, भवानी खोये हैं ।। माथे चुनड़ी... ।।। २ ।।

तेरे हाथों में चूड़ा खन खन खनके,
तेरी नथली में हीरा दम दम दमके,
नगीनों से, जड़ा तेरा, ये बोरला चमके ।। तेरे हाथों ... ।। ३ ।।

मैया पायल खनकती है पांवों में,
सारे सेवक डूबे है दादी भावों में,
बिछी पलके, हमारी माँ, तुम्हारी राहों में ।। मैया पायल ... ।। ४ ।।

राणी सती माँ झुझंणु से आई है,
''हर्ष'' बेटों पे खुशियाँ माँ छाई है,
तेरी प्यारी, ये झांकी माँ, बड़ी मन भाई है ।। राणी सती .... ।। ५ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

(तर्ज : अटक्योड़ी नाव पार करनी पड़सी...)

मंगसिर वदि की नौमी निकट आई,
राणी सती आज भगतों प्रकट हुई ।। टेर ।।

वीर गति तन धन जी पाई,
सतवन्ती जद सत दिखलाई,
राणा की परीक्षा बड़ी विकट भई ।।
राणी सती आज...।। १ ।।

राणा ने माँ हुकम सुणायो,
सासरिये भष्मि ले जायो,
अग्नि की लपटां सुं लिपट गई ।।
राणी सती आज...।। २ ।।

''हर्ष'' कह्वे सब महिमा गाओ,
सती दिवस दादी को मनाओ,
भष्मि के ढ़ेर में माँ सिमट गई ।।
राणी सती आज...।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : देखा एक ख्वाब तो ये....)

जलजला उठा है या तूफान आ गया,
रावण ने पूछा कौन ये बलवान आ गया,
लंकापति से युं कहा विभिषण ने,
बलियों में भूप वीर हनुमान आ गया ।। टेर ।।

राम का दूत बनके आया है,
राम जी का संदेशा लाया है,
ब्रह्म शस्त्र छोड़ दिया इन्द्रजीत ने,
बंधके अपनी इच्छा से गुणवान आ गया ।। १ ।।

देख पर्वत सा इसका सीना है,
तुझको क्युं आ गया पसीना है,
छेड़ेगा तो छोड़ेगा ना रावण तुझे,
काल बनके तेरा ओ शैतान आ गया ।। २ ।।

अपनी मर्यादा क्युं भुलाई है,
पूंछ में आग क्युं लगाई है,
फूंक देगा देख लेना लंका तेरी,
दानवों के लेने ''हर्ष'' प्राण आ गया ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : मेरा नाम है चमेली...)

देखो सालासर को राजा,
बैठ्यो खोल खजानो आजा,
भर देसी रे भण्डारो तेरो बावला ।। टेर ।।

साँची है सकलाई ऐंकी, साँचो न्याव चुकावे,
शरणागत ने मेरो बाबो, चरणां मांही बिठावै,
तु इत उत, क्युँ डोले ऽऽऽ,
बालाजी की शरण में आ, किस्मत सुं ज्यादा पा जा ।। १ ।।

कहणों कोन्या पड़सी ईंने, कण-कण की यो जाणें,
बिन बोल्याँ ही यो भगतां के, मन की पीड़ पिछाणे,
तु इत उत, क्युँ डोले ऽऽऽ,
बालाजी की किरपा सुं तु, दुखड़ा आज मिटा जा ।। २ ।।

के सोचे तु ''हर्ष'' बावला, बेगो टिकट कटा ले,
खुल जासी किस्मत को तालो, चरणां धोक लगाले,
तु इत उत, क्युँ डोले ऽऽऽ,
बालाजी की महर सुं तेरे, मन की आस पुरा जा ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : किस्मत वालों को मिलता है...)

बाबा किरपा का, रखना तू सर पे मेरे हाथ,
मेहन्दीपुर धाम तुम्हारा, दीनों के नाथ।। टेर ।।

जिसपे तेरी किरपा हो जाये,
बाल ना बाकां कोई कर पाये,
काल अगर आना भी जो चाहे,
तेरे डर से वो ना आ पाये,
हरपल में चाहुं बाबा, तेरा ही साथ ।। १ ।।

जो भी तेरा सुमिरन करते हैं,
बिन चिंता के जीवन जीते हैं,
भूत पिशाच निकट ना आ पाये,
नाम से तेरे वो भी डरते हैं,
तेरी किरपा की पाऊँ, मैं भी सौगात ।। २ ।।

इस दुनिया में देव नहीं ऐसा,
''हर्ष'' मेरे बजरंग बली जैसा,
श्री चरणों का चाकर हूँ तेरा,
तुम रक्षक हो डरना फिर कैसा,
अपने सेवक की रखना, इतनी सी बात ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : छत पे सोया था बहनोई...)

दोहा : रामदूत अंजनी का जाया, सालासर मोहे आज बुलाया।
महर करो हे पवन के लाला, खोल मेरी तकदीर का ताला।।

संकट मोचन बाला जी, मैं तेरी शरण में आ गया,
किरपा दयालु मोपे रखना, दर तेरा ये भा गया ।। टेर ।।

सालासर तेरा धाम पुराना, पूरब मुख बैठे हनुमाना,
राम नाम अंकित दरवाजे, पवन तनय बल पवन समाना,
बाबा हमें है ''तेरा सहारा'' -३,
तेरा सिवा ना ''दूजा हमारा'' -३
अपना समझ के चरणों में तेरे, बालाजी मैं आ गया ।।
किरपा... ।। १ ।।

संकट मोचन संकट हरले, महर नजर मुझ पर भी करदे,
इष्ट देव हे बजरंग बाला, हाथ दया का सिरपे धर दे,
तेरे सिवा दर ''दूजा ना जानुं''-३
सब कुछ मैं अपना ''तुझको ही मानु'' - ३
मुझको भरोसा तेरा है बाबा, तेरे भरोसे मैं आ गया ।।
किरपा... ।। २ ।।

दान दया का मुझको देना, शरणागत की सुध तु लेना,
''हर्ष'' तेरा जनमों का चेरा, बीच भंवर से नैया खेना,
हार गया हुँ ''मुझको सम्भालो''-३
नादां समझ के ''मुझको निभालो''-३
सारे जहां के सुख का पिटारा, चौखट पे तेरी पा गया ।।
किरपा... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : झुमका गिरा रे...)

सालासर चालो जी, ल्यो मेलो आयो चैत को ।। टेर ।।

टाबर टीकर आड़ोसी, पाड़ोसी ने ले चालो,
देसी घी के लाडुड़ां की, सवामणी करवाल्यो,
धोक लगावण देश दिशावर, सुं सेवकिया आवे,
लाल ध्वजा हाथां में लेकर, ''सगला पैदल जावै''-२ ।।
सालासर चालो जी... ।। १ ।।

सूरज स्यामी मन्दिर मांही, बैठ्यो बजरंग बालो,
मन-इच्छा पूरण कर देसी, माँ अंजनी को लालो,
बेगा सा थे आकर भगतो, चरणां धोक लगावो,
रुपिया पीसा बेटा पोता, ''जो चावो सो पावो''-२ ।।
सालासर चालो जी... ।। २ ।।

सालासर सरदार को सारे, जग में डंको बाजे,
दुनिया आके शीश झुकावे, बालाजी के आगे,
''हर्ष'' कह्वे यो देव निरालो, झटपट करे सुणाई,
थे भी आके काम बणाल्यो, ''कंइया देर लगाई''-२ ।।
सालासर चालो जी... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : तेरे मस्त मस्त दौ नैन...)

हर युग में बाला जी का बाजे है डंका,
नाम से तेरे थर-थर कांपे है लंका -२
हे वीर बली बलवान - हे अजर अमर हनुमान,
हे अजर अमर हनुमान, हे वीरबली बलवान ।। टेर ।।

त्रेता में राम का, दुख में सहारा,
तू ही बना था बाबा, तूही बना था,
द्वापर में अर्जुन के, रथ पे सवार हो,
तू ही चला था बाबा, तूही चला था,
मारी हुंकार तूने, तो डर के मारे,
गर्भ गिराये दानव, नारी के सारे -२।। १ ।।

मुर्छा लखन की, सीता हरण की,
गुत्थी सुलझती कैसे, गुथी सुलझती,
मुश्किलों में राम की, तेरे सिवा बोलो,
हालत सम्भलती कैसे, हालत सम्भलती,
कर ना सके जो कोई, करके दिखाया,
राम सिया को सीना, चीर दिखाया -२।। २ ।।

पर्वत उठाके लाना, लंका को जाके जलाना,
वश में था तेरे बाबा, वश में था तेरे,
लक्ष्मण की जान बचाना, सीता की सुध ले
आना, वश में था तेरे बाबा, वश में था तेरे,
मारी छलांग लांघे, सात समन्दर,
घातक बना था ''हर्ष'', छोटा-सा बन्दर -२।। ३ ।।

श्री सांई वन्दना

(तर्ज : जी लेगें सरकार तेरी सरकारी में...)

चरणों में सांई नाथ तेरे झुक जायेगें,
हम चौखट पे तेरे शीश झुकाने आयेगें ।। टेर ।।

हमने तो ये अरज लगाई, बाबा हुकम सुनाओ तुम,
सिरडी की पावन भूमी पर, हमको नाथ बुलाओ तुम,
जीवन भर गुणगान तुम्हारा गायेगें ।।
हम चौखट पे...।। १ ।।

शरणागत को कंठ लगाते, ऐसा अद्‌भुत द्वारा है,
महर नजर हमपे भी होगी, ये विश्वास हमारा है,
आर्शीवाद तुम्हारा हम भी पायेगें ।।
हम चौखट पे...।। २ ।।

''हर्ष'' कहे अब देर करो ना, दर्शन हमें दिखाओ जी,
अपने चरणों की सेवा में, हमको नाथ लगाओ जी,
सेवा कर ये जीवन सफल बनायेगें ।।
हम चौखट पे...।। ३ ।।

श्री सांई वन्दना

(तर्ज : देना हो तो दीजिये...)

मैं भी एक फकीर हुँ, तू भी एक फकीर,
मैं याचक हुँ तु दाता, लिख दे मेरी तकदीर ।। टेर ।।

भटक रहा था मारा मारा चोट जिगर पे खाई है,
तेरे दर पे आज मुझे तकदीर मेरी ले आई है,
अब लेकर ही लौटुँगा, तेरी रहमत की जागीर ।।
मैं भी एक फकीर...।। १ ।।

कहने को तो साधु है तु लेकिन एक फरिश्ता है,
गम के मारों के संग साँई अद्‌भुत तेरा रिश्ता है,
सिरड़ी में लगी रहती है, भगतों की भारी भीड़ ।।
मैं भी एक फकीर...।। २ ।।

कितने कितनों की किस्मत को तूने नाथ संवार दिया,
डूब रही थी जिसकी नैया तूने उसे उबार दिया,
तेरे ''हर्ष'' की सांई खोलो किस्मत पे पड़ी जंजीर ।।
मैं भी एक फकीर...।। ३ ।।

श्री सांई वन्दना

(तर्ज : जब पीठ पे श्याम विराजे...)

हर साल तेरे दर आऊँ, साईं चरणन शीश नवाऊँ,
दयालु तेरे सिरडी में, दयालु तेरे सिरडी में ।। टेर ।।

बड़ा ही अनोखा तेरा सिरडी का धाम,
करुं तेरे चरणों में सांई मैं प्राणाम,
तुझे मीठे भजन सुनाऊँ, गुणगान तेरा मैं गाऊँ ।।
दयालु ...।। १ ।।

भगतों की बाबा तुही लेता है खबर,
तेरा जैसा दुनिया में दूजा ना मगर,
तेरी सेवा में रम जाऊँ, ये जीवन धन्य बनाऊँ ।।
दयालु ...।। २ ।।

''हर्ष' कहे रे सांचा तेरा दरबार,
भगतों को होती मेरे साईं तेरी दरकार,
तेरी किरपा मैं पा जाऊँ, तो भव से मैं तर जाऊँ ।।
दयालु ...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मुबारक हो सबको समां ये सुहाना...)

अगर रुठ जाये तो रुठे जमाना,
दयालु मुझे तू ना दिल से भुलाना,
मैं हुँ दीवाना-दीवाना-दीवाना ।। टेर ।।

हजारों तुम्हारे हैं अहसान बाबा,
मेरे दिल में जागे हैं अरमान बाबा,
चढ़ा तेरी भगती-२, का परवान बाबा,
हमेशा कन्हैया मुझे तु निभाना ।।
दयालु मुझे... ।। १ ।।

मेरे श्याम सुनले तु मेरी दुहाई,
कभी सहने पाऊँ ना तुझसे जुदाई,
अगन तेरी चाहत-२, की तूने जलाई,
इसी ताप में युं हमेशा जलाना ।।
दयालु मुझे... ।। २ ।।

वफा का ये दीपक तो जलता रहेगा,
तेरा प्यार दिल में युं पलता रहेगा,
ये बन करके आंसु -२, पिघलता रहेगा,
तेरे ''हर्ष'' को दिल में देना ठिकाना ।।
दयालु मुझे... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : हम तेरे बिन अब नहीं रह सकते...)

अब तेरे दर से मैं ना हटुँगा, तेरे सिवा यहाँ कौन मेरा,
तुमसे बिछुड़ के श्याम बतादे, जाऊँ कहाँ मैं जाऊँ कहाँ,
क्युँकी तुम ही हो, बस तुम ही हो, बंदगी मेरी तुम ही हो,
वंदना, मेरी अर्चना, मेरी प्रार्थना बस तुम ही हों ।। टेर ।।

तेरा मेरा नाता है ऐसा तू है दीया और मैं बाती,
तेरी ही लौ में जलता हुँ बाबा, साँझ सुबह और दिन राती,
तेरी महिमा बयां करे मेरी जुबां, मेरे मन में धाम तेरा ।।
क्युँ की...।। १ ।।

तू जो मिला तो आज हुई है, जनमों की आश मेरी पूरी,
अब ना जुदा तू होना बाबा, सह ना संकु तुमसे दूरी,
मेरी हर धड़कन है नाम तेरे, हर सांस में श्याम मेरा ।।
क्युँ की...।। २ ।।

तेरी सेवा करता रहुँ मैं, इतना मुझे वरदान तू दे,
''हर्ष'' दिवाने की अर्जी को, श्याम जरा सम्मान तू दे,
हर हाल में तेरे गुण गाऊँ, मेरे लब पे हो नाम तेरा ।।
क्युँ की...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आया सावन झूमके...)

अंगना, सजाया, तेरा झूला डलवाया देखो,
रिम झिम पड़े फुहार रे, आया सावन सांवरे ।। टेर ।।

बैठी, चाँदी के पाटे पे, बृज की दुलारी राधा, अलबेली,
कान्हा, मुरली बजाये सारी, सखियां सहेली करे, अठखेली,
फर फरऽऽऽ होये-२, चूनर, उड़ उड़ जाये बाजे,
पायलिया की झनकार रे, आया सावन सांवरे ।। १ ।।

छाई, उमड़ घुमड़ के, काली घटायें नीले, अम्बर पे,
प्यारे, बूंदो के मोती तेरे, चरण धुलाये देखो, झर झर के,
अमवाऽऽऽ होये-२, की डाली गाये, कोयलिया काली छेड़े,
रागिनी मेघ मल्हार रे, आया सावन सांवरे ।। २ ।।

''हर्ष'', प्रेम के रंग में, श्याम के संग भीगे, राधे रानी,
हुई, युगल छवी को, निरख ये दुनिया, दीवानी,
खुशियाँऽऽऽ होये-२, मनावो इन्हे, झूलना झुलावो झूले,
राधे संग मदन मुरार रे, आया सावन सांवरे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आजा रे ओ मेरे दिलबर आजा...नूरी)

आजा रे, आजा रे ओ मेरे श्याम सलोने,
मुझको दर्श दिखा जा रे, आजा रे,
ओSSSS कान्हा -२ ।। टेर ।।

याद में तेरी, नीर बहाये, बैरन अँखिया मेरी,
आँखों से क्युँ, ओ निर्मोही, नीन्द चुराई मेरी,
आजा रे, आजा रे ओ मेरे श्याम सलोने,
ढ़ाँढ़स आज बंधा जा रे, आजा रे..।। १ ।।

हलकी हलकी, टीस जिया में, नाम की तेरे जागे,
बेबस हो गई, मैं तो छलिये, बैरी दिल के आगे,
आजा रे, आजा रे ओ मेरे श्याम सलोने,
दिल की पीड़ मिटा जा रे, आजा रे..।। २ ।।

कबसे तेरी, बाट निहारुँ, मेरे मुरली वाले,
खुद को मैंने, आज किया है, कान्हा तेरे हवाले,
आजा रे, आजा रे ओ मेरे श्याम सलोने,
अपना मुझे बना जा रे, आजा रे..।। ३ ।।

''हर्ष'' दिखा दे, सूरत प्यारी, नैनन प्यास बुझा दे,
इस बिरहन के, सोये अरमां, आके आज जगा दे,
आजा रे, आजा रे ओ मेरे श्याम सलोने,
अरमां आज जगा जा रे, आजा रे..।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(स्वरबद्ध : श्री प्रवीण बेदी -मो०-९८३०४३२६६९)

आँखों के सागर से बाबा, कितनी बूंदे और बहाऊँ,
पीड़ जिगर की रो कर तुमको, दीनो के हे नाथ दिखाऊँ ।।

दर्द भरे सीने में दाता, छुपा हुआ है इक झरना,
समझ सको तो समझ लो पीड़ा, फूट पड़ेगा ये वरना,
आँसू का ना मोल जगत में दुनिया को मैं क्या दिखलाऊँ,
आँखों के सागर...।। १ ।।

हार जीत होती रहती है, इसका नहीं मलाल मुझे,
जान के भी अनजान बने हो, कुछ भी नहीं ख्याल तुझे,
मेरे गम का कारण क्या है, कैसे तुमको मैं बतलाऊँ ।।
आँखों के सागर...।। २ ।।

किसे फिकर है ''हर्ष'' किसी के, आँसू के इन धारों की,
परवाह तुम करते हो बाबा, हरदम गम के मारों की,
बूंद बूंद आँसू से तेरे, श्री चरणों को आज धुलाऊँ ।।
आँखों के सागर...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मन डोले मेरा तन डोले ...)

इत डोले क्युँ उत डोले तेरी मंजिल खाटू धाम रे,
तेरे काम बनाये सांवरिया ।। टेर ।।

भटक रहा क्युं मारा मारा काहे दुखड़े झेले,
हारे का बस एक ठिकाना श्याम शरण तु ले ले, बंदे...
इसका हो ले, इक बर रो ले, फिर रोने न देगा श्याम रे ।।
तेरे काम...।। १ ।।

इस धरती पर इसके जैसा देव नहीं है दूजा,
कलिकाल में घर-घर होती श्याम घणी की पूजा, प्यारे...
किस्मत खोले, गद्‌गद् होले, तुझे मिल जाये आराम रे ।।
तेरे काम...।। २ ।।

''हर्ष'' कहे हारे का सहारा दीन दुखी का साथी
चौखट पे श्री श्याम प्रभु के दुनिया शीश झुकाती, देखो...
कुछ ना बोले, भगती तोले, भगतों की आठों याम रे ।।
तेरे काम...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ओ रब्बा कोई तो बताये प्यार होता है क्या..)

ओ भगतो, सांवरे का द्वारा, बोलो मिलता किसे,
जिसने समर्पण किया यहाँ, मिलता उसे ।। टेर ।।

जो जब भी हारा, इसे संग पाता,
जीत के करीब बाबा, पल में है लाता,
ओ भगतो, श्याम का सहारा, बोलो मिलता किसे,
जिसने मन से पुकारा इसे, मिलता उसे ।। १ ।।

दामन भरा भगतो, सबने है देखा,
देते मगर बोलो, किसने है देखा,
ओ भगतो, भरती है झोली, बोलो किसकी यहाँ,
जिसने भरोसा किया जिसका, सर है झुका ।। २ ।।

ख्यालो में इसके, रहता जो खोया,
विरह में दिवाना, ना जागा ना सोया,
सताने लगे जब, वो यादों के साये,
छलक जाये आँसू, नयन भर आये,
स्वाँस रुकने लगे, होश खोने लगे,
''हर्ष'' भूले खुदी, भक्त रोने लगे,
ओ भगतो, श्याम का दिवाना, बोलो कहते किसे,
जिसने सब कुछ लुटाया यहाँ, कहते उसे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ओ बसन्ती पवन पागल...)

ओ सलोने, छोड़ ब्रज को, ना जा रे ना जा,
रोको कोईऽऽऽऽ ।। टेर ।।

प्रेम कर उसको निभाना, प्रेमी की पहचान है,
प्रीत की उस रीत से तु, क्युं भला अनजान है,
प्यार में पागल बना के, ना जा रे ना जा,
रोको कोई ऽऽऽऽ ।।
ओ सलोने...।। १ ।।

याद कर तेरे सितम वो, हमने जो हँस के सहे,
तेरी उन शौतानियों के, किस्से अब किससे कहें,
अपनों से बंधन छुड़ाके, ना जा रे ना जा,
रोको कोई ऽऽऽऽ ।।
ओ सलोने...।। २ ।।

पत्ता पत्ता डाली डाली, सबको तुझसे प्यार है,
कुंज की गलियों को मोहन, तेरी ही दरकार है,
''हर्ष'' मीठी धुन सुना के, ना जा रे ना जा,
रोको कोईऽऽऽऽ ।।
ओ सलोने...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ओय होय ये कुड़िया...)

ओय होय ये मैला फागुन का,
कहीं मचती धमाल, कहीं उड़ता गुलाल,
नहीं दूजी कोई मिसाल ।। टेर ।।

श्याम का निशान लेके चलते दिवाने,
श्रद्धा से आये बाबा श्याम को रिझाने,
कोई चले होले-२ पड़े पैरों में फफोले,
नहीं फिर भी कोई मलाल ।। १ ।।

हाथों में अबीर है गुलाल भरी झोलीयाँ ,
झुमें नाचे गाये देखो, भक्तों की टोलियाँ,
मीठे भजन सुनाये, गाके रंग जमाये,
मले इक दूजे के गुलाल ।। २ ।।

गूंज रही है बाबा श्याम की जयकार,
बड़ा ही अनोखा है ये लीले का सवार,
सारी दुनिया है आई, आके खाटू में समाई,
लगी भक्तों की भीड़ विशाल ।। ३ ।।

श्याम की हवेली देखो खूब सजी,
''हर्ष'' निहारे इसे घड़ी-घड़ी,
बैठा खोल के खजाने, आजा लूटले दिवाने,
बाबा खूब लुटाये माल ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : छूकर मेरे मन को...)

कर दे मेरे बाबा, तेरी किरपा का इशारा,
भटका ये प्राणी, मिल जाये इसे किनारा ।। टेर ।।

जर्जर हो गई है, ''जीवन की कश्ति''-२
पाप का पुतला हूँ, ''श्रद्धा ना भक्ति''-२
माया के मद में, मैं भूला नाम तुम्हारा ।।
कर दे मेरे...।। १ ।।

दंभ की लहरों में, ''बहता चला जाऊँ''-२
आज किनारे का, ''रस्ता नहीं पाऊँ''-२
मंजिल दिखला दे, ले थाम ले हाथ हमारा ।।
कर दे मेरे...।। २ ।।

श्याम मेरा जीवन, ''तुझको सर्मपित हो''-२
भाव मेरे बाबा, ''चरणों में अर्पित हो''-२
अर्पण सेवा में, ''हर्ष'' का जीवन सारा ।।
कर दे मेरे...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : सलामत रहे दोस्ताना हमारा...)

कहे चाहे कुछ भी जमाना दयालु,
तुम्हारा रहुँगा दिवाना दयालु ।। टेर ।।

ना बिछडुंगा दर से कभी सांवरे,
कसम चाहे ले लो अभी सांवरे,
पता कोई पूछे तो कहता हूँ श्याम,
कि मेरा ठिकाना है ''अब खाटू धाम''-२
तेरा दर मेरा आशियाना दयालु ।। १ ।।

तुही मेरा मांझी तु पतवार है,
तुही मेरा हमदम तु दिलदार है,
तेरा नाम बस मैंने सुमिरन किया,
मेरे श्याम रखना युं ''अपनी दया''-२
हमेशा तु मुझको निभाना दयालु ।। २ ।।

जमाने की अब कोई परवाह नहीं,
तुम्हारे सिवा बस कोई चाह नहीं,
मैं तेरा हूँ तेरा रहूँगा सदा,
कहे ''हर्ष'' तुमसे ये ''वादा रहा''-२
रहे चरणों में ठिकाना दयालु ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मैं तैनु समझावां की...)

कन्हैया तेरी यादों में, मैं जागुं अब रातों में,
न दिल को सुकुन जरा, ये चढ़ा है जुनुन तेरा,
तुही तो मेरी साँसो में, कन्हैया तेरी यादों में ।। टेर ।।

मेरे मन में, बस गई प्यारे, प्यारी सी ये सूरत,
मन मंदिर में , जब भी देखुं, देखुं तेरी मूरत,
आँखों में तु हाय, ख्वाबों में तु, मैं क्या करुँ,
मैं करुँ इन्तजार तेरा, तु कर विश्वास मेरा ।। १ ।।

छोड़ के तुमको, मैं कहाँ जाऊँ, तूही मेरी मंजिल,
तु समझे या, ना समझे तु, मुझको अपने काबिल,
जिया कहीं हाय, लागे नहीं, मैं क्या करुँ,
मैं करुँ इन्तजार तेरा, तु कर विश्वास मेरा ।। २ ।।

''हर्ष'' कभी भी, ना टूटेगा, तेरा मेरा बंधन,
तु नदिया तो, मैं धारा हूँ, ऐसा है ये संगम,
मोपे चढ़ा हाय, जादू तेरा, मैं क्या करुँ,
मैं करुँ इन्तजार तेरा, तु कर विश्वास मेरा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तुम्हारी नजर क्यूँ खफा ...)

कन्हैया महर की नजर हो गई,
तुम्हारी इनायत मुझे मिल गई,
कभी रुठ कर जो जुदा हो गई,
वही सारी दौलत मुझे मिल गई ।। टेर ।।

भुला ना सकुं इस जहाँ के सितम वो,
दयालु किये तूने मुझपे करम जो,
तेरा हाथ जो, तूने सिर पे धरा,
जमाने की छतरी मुझे मिल गई ।। १ ।।

अगर श्याम तूने सम्भाला ना होता,
सेवक के मुख में निवाला ना होता,
तेरे दर पे मैं, झुक गया जिस घड़ी,
शरण आपकी उस घड़ी मिल गई ।। २ ।।

सिवा तेरे दूजा ना जीवन में कोई,
मेरी सांस में मेरी धड़कन में तुही,
बिलखता रहा, ''हर्ष'' मैं तो सदा,
सिसकते लबों को हँसी मिल गई ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मधुवन खुशबु देता है...)

करुणा जो दिखलाता है, जीवन ज्योत जलाता है,
जीना उसका जीना है, जो हारे का साथ निभाता है ।।

प्रेम दया और सेवा की, ज्योत जली है जिस दिल में,
भाव से ढूंढा जिसने भी, ''श्याम मिले हैं इक पल में''-२
दरदी का जो दर्द हरे, श्याम की किरपा पाता है ।। १ ।।

मात-पिता की सेवा में, जीवन अपना अपर्ण कर,
श्री चरणों में श्रद्धा से, ''सर्वस्व आज समर्पण कर''-२
मात-पिता की आँखों में, श्याम नजर आ जाता है ।। २ ।।

प्रेम के भूखे गिरधारी, साग विदुर के खाये थे,
राम प्रभु ने भाव भरे, ''जूठे बेर चबाये थे''- २
भाव प्रभु का भोजन है, भाव ही इनको भाता है ।। २ ।।

प्रेम करे जो दीनों से, प्रीत उसी को मिलती है,
हारे के जो साथ चले, ''जीत उसी को मिलती है''-२
''हर्ष'' उसे ये जीवन में, पग - पग जीत दिलाता है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बहुत शुक्रिया बड़ी मेहरबानी...)

करुँ शुक्रिया, तुम्हारा मैं कैसे,
दयालु मुझे ये, समझ में ना आये,
ये कर्जा तेरा, बढ़ता ही जाये,
चुकाऊँ मैं कैसे, समझ में ना आये ।। टेर ।।

करुँ पेश बाबा, ये आँखों के मोती,
अगर तेरी दाता, दया जो ना होती,
मेरी नाव युं ही, भटकती ही रहती-२
मुझे थाम के तुम, किनारे पे लाये ।। १ ।।

तेरा साथ है फिर, नहीं कोई गम है,
तेरा प्यार पाऊँ, भला क्या ये कम है,
तुझे देखने की, तमन्ना है दिल में -२
कभी तो किसी दिन, नजर श्याम आये ।। २ ।।

रहुँ तेरा बनके, बस इतना तू कर दे,
नस नस में मेरी, तेरा प्यार भर दे,
कहीं ऐसा ना हो, तेरा ''हर्ष'' बाबा -२
निगाहों से तेरी, कभी दूर जाये ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ओ राधा म्हाने...)

कान्हुडा म्हाने, खाटू बुला ल्योजी,
फागणिये में बाबा, थारी ओल्युँ आवे जी ।। टेर ।।

साँवरिया एकर हेलो लगावो जी -२
थारे दर्शन के तांई, हिवड़ो ललचावे जी ।।
कान्हुडा म्हाने...।। १ ।।

गिरधारी थारो, हुकम सुणावो जी -२
थारे मंगला की बाबा, म्हाने याद सतावे जी ।।
कान्हुडा म्हाने...।। २ ।।

ओ कान्हा म्हारी आस पुरावो जी -२
थारे खीर चूरमें की, म्हारे मन में आवे जी ।।
कान्हुडा म्हाने...।। ३ ।।

ओ बाबा म्हापे, किरपा दिखावो जी -२
थारो ''हर्ष'' भगत थांसु, या अर्ज लगावे जी ।।
कान्हुडा म्हाने...।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(स्वरबद्ध : श्री प्रवीण बेदी -मो०-९८३०४३२६६९)

कान्हुड़ा म्हारी नगरी में मंदरियो बणवादे,
सारी दुनिया सुं अलबेली, मकराणे की नई नवेली,
खाटू जैसी श्याम हवेली,
टाबरिया अर्ज लगावे है म्हारी आस पुरा दे ।। टेर ।।

हर ग्यारस ने ज्योत जगास्याँ,
बारस ने थारी धोक लगास्याँ,
मीठा मीठा भजन सुणस्याँ,
मंदिर में तेरा भगतां ने चाहे तु नचवाले ।। १ ।।

रोजीना म्हें दरसण पावाँ,
सोणो सो सिणगार सजावाँ,
खीर चूरमो भोग लगावाँ,
सांवरिया जो तु चावे तो छप्पन भोग लगाले ।। २ ।।

फागण में मेलो भरवास्याँ,
मंदरिये ने खूब सजास्याँ,
''हर्ष'' कह्वे हुड़दंग मचास्याँ,
बागे ने चाहे कान्हुड़ा सतरंगी रंगवा ले ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(स्वरबद्ध : श्री प्रवीण बेदी -मो०-९८३०४३२६६९)

दोहा : कालजिये में सांवरो बड़ग्यो चोड़े धाड़ ।
मैं बड़भागी हूँ घणो नाचूँ बीच बजार ।।

कालजिये में श्याम म्हारे घर करग्यो,
लाख निकाल्याँ निकले कोन्या ऐसो बड़ग्यो ।। टेर ।।

सांवरिये सुं हेत लगाकर अपणो आप लुटायो,
रात्युं नीन्द न आवे बैरी ऐसो रोग लगायो,
हिवड़े की मुण्डेर पे यो चोखो चढ़ग्यो ।।
कालजिये में...।। १ ।।

प्रेमी के मनड़े की भाया प्रेमी प्रीत पिछाणे,
कान्हुड़े से प्रीत पुराणी या दुनिया के जाणे,
इब तो भाया जोर को यो खुंटो गड़ग्यो ।।
कालजिये में...।। २ ।।

मैं बड़भागी मन्ने मिलग्यो प्रेमी श्याम सरीखो,
श्याम नाम इब मीठो लागे बाकी सै क्युँ फीको,
''हर्ष'' सांवरो म्हापे कैसो जादु करग्यो ।।
कालजिये में...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जीवन के दो पहलू हैं हरियाली और रास्ता ...)

खोल मेरी तकदीर का ताला, मेरे सांवरे अब तो जरा,
शरणागत हूँ श्याम तेरा, गले लगा चाहे बिसरा ।। टेर ।।

खबर ना थी बहार आके, सितम इतने भी ढ़ायेगी,
हमारे इस घरोंधे पर, कोई बिजली गिरायेगी,
रातें बड़ी मुश्किल से कटती, दिन हुए भारी देख जरा ।।
शरणागत हूँ...।। १ ।।

हमारे हाल से गिरधर, बता दे बेखबर है क्युँ,
हमारी आहों से दिलबर, बतादे बे असर है क्युँ,
मेरे मुकद्दर में जो लिखा है, आज संवारो उसे जरा ।।
शरणागत हूँ...।। २ ।।

तुम्हारे साथ से बढ़ कर, भला मैं और क्या चाहुँ,
दया का हाथ हो सिर पर, मैं ज्यादा और क्या चाहुँ,
''हर्ष'' नहीं है दूर तु हमसे, श्याम मिटा ये भेद जरा ।।
शरणागत हूँ...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : शिशा हो दिल हो...)

दोहाः होठ भले हो बन्द हमारे, जुंबा भले खामोश रहे।
आँखे तो मन दर्पण है, बिन बोले हर बात कहे ।।

खुशी हो या गम हो, आँखें बोल देती है,
दिल में दबी हुई बातों की, परते खोल देती है ।। टेर ।।

होऽऽऽ कहना कुछ आसान न हो, दिल में जब अरमान न हो,
मश्किल हो हालात बड़े, सीने में जजबात भरे,
ये दो नैना हैं ऐसे, दिल का दर्पण हो जैसे,
लाख तुम न चाहो तो, आँखे बोल देती है ।। १ ।।

कोई ना सहारा हो, कोई ना हमारा हो,
धीर उठे तुफानों में, जब-गम के सैतानों में,
खुद को ये मालूम भी हो, कोई साथ नहीं देगा-२,
आंखे जान जाती है, जज्बे टटोल लेती है।। २ ।।

''हर्ष'' ने तो ये देखा है, आँखे मन का शीशा है,
जिस पल ये बह जाती है, बिन बोले कह जाती है,
कोई जब ना कह पाये, दिल में बात दबा जाये,
लब चुप रहते हैं, आँखे तोल लेती है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : शरीफों का जमाने में....)

गरीबों का जमाने में, मसीहा और ना दूजा है,
दयालु श्याम के जैसा -२ ।। टेर ।।

भगत की आँख में आँसु, कभी ये देख ना सकता,
कभी ये देख ना सकता,
जहाँ में कौन करता है, किसी के वास्ते कुछ वैसा,
दयालु श्याम के जैसा -२ ।। १ ।।

गरीबों का ये साथी है, ये हारे का सहारा है,
ये हारे का सहारा है,
किसी ने देखा है बोलो, कहीं भी देवता कोई ऐसा,
दयालु श्याम के जैसा -२ ।। २ ।।

बिना बोले ही भगतो की, ये मंशा जान जाते हैं,
ये मंशा जान जाते हैं,
किया क्या ''हर्ष'' दुनिया में, किसी ने काम हो चाहे कैसा,
दयालु श्याम के जैसा -२ ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मुस्कुराने की वजह तुम हो...)

गुनगुनाने की वजह तुम हो,
दिल लुभाने की वजह तुम हो,
जिया लागे ना, लागे ना, तुझे बिन, ओ रे सांवरे,।। टेर ।।

दिल दिया तुझको, तोड़ मत देना,
थाम के ये, हाथ मेरा, छोड़ मत देना ।।
जिया लागे ना...।। १ ।।

दूर ना होना, तु निगाहों से,
मुझको दाता, भर ही लेना, अपनी बाहों में ।।
जिया लागे ना...।। २ ।।

जी न पाऊँगा, बिन तेरे कान्हा,
मैं हुँ तेरा, तु हैं मेरा, भूल ना जाना ।।
जिया लागे ना...।। ३ ।।

तु मिला मुझको, जिन्दगी पाई,
छोड़ दुनिया, श्याम तेरी, बंदगी पाई ।।
जिया लागे ना...।। ४ ।।

साथ ये तेरा, ''हर्ष'' ने पाया,
जिन्दगी की, हर खुशी को तुमसे ही पाया ।।
जिया लागे ना....।। ५ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : गोरे गोरे चांद से मुख पे कारी-कारी आँखे है...)

गौरी गौरी राधा रानी, साँवल सा मेरा सांवरिया,
युगल छवि को देख सखी री, आज हुई में बावरिया ।।

अखिल निरंजन श्याम कन्हाई,
रसिकन की धन राधा जू,
नन्द गाँव को कुँवर कन्हैयो, बरसाने की गूजरिया ।।
गौरी गौरी राधा...।। १ ।।

शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक,
करत विनय दोऊ कर जोड़े,
बांकी अदायें, तिरछी निगाहें, होठों पर है बांसुरिया ।।
गौरी गौरी राधा...।। २ ।।

अनुपम झाँकी मन को मोहे,
श्री राधा और बल्लभ की,
''हर्ष'' युँ लागे चमके मानो, ज्युँ बदरा में बिजूरिया ।।
गौरी गौरी राधा...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : सागर किनारे ...)

चरणों में तेरे, मिला जो ठिकाना,
प्यासे को मानो कोई, सावन मिला है ।। टेर ।।

मैंने जो चाहा, जीवन में पाया,
संग मेरे रहता, सांवरे का साया,
शिकवा किसी से है ना, कोई गिला है ।। १ ।।

मंजिल का मेरी, पता कुछ नहीं था,
अंधेरों में युहीं, भटका किया था,
तेरे प्यार का दिल में, दीपक जला है ।। २ ।।

नीन्दों में अब तू, सपनों में तू है,
सांसों की लय में, धड़कन में तू है,
तेरी बंदगी का ऐसा, जादू चला है ।। ३ ।।

इतना किया है, तो इतना भी कर दे,
सेवा का मुझको, मेरे श्याम वर दे,
मन का ये मोती ''हर्ष'' तुम्ही से खिला है ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जब कोई बात बिगड़ जाये...)

जब कोई हाथ छुड़ा जाये, बेटा अकेला रह जाये,
तुम रहना साथ मेरे, ओ सांवरे,
तुही तो है, तुही तो था, हर कदम तु, संग चला,
तुम चलना साथ मेरे, ओ सांवरे ।। टेर ।।

मैं तड़पा था दिन रात, अपनों ने जो छोड़ा साथ,
तुमने ही, थामा था, विपदा में ये मेरा हाथ,
जब कोई मुश्किल आ जाये, अपना नजर नहीं आये,
तुम रहना साथ मेरे, ओ सांवरे ।। १ ।।

दिल को मेरे मिला सुकुं, आफत में जो मिला था तु,
शुक्रिया, तुम्हारा मैं, तुही बता दे कैसे करुँ,
जब कोई प्रीत न कर पाये, जब कोई मीत न बन पाये,
तुम रहना साथ मेरे, ओ सांवरे ।। २ ।।

हो चाहे जो अंजाम, ये वादा रहा मेरे श्याम,
उम्र भर, उचारेगा, यें ''हर्ष'' तुम्हारा नाम,
जब मेरा ध्यान भटक जाये, माया मुझको भरमाये,
तुम रहना साथ मेरे, ओ सांवरे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : लम्बी जुदाई...)

दोहा : बिछड़े कभी ना हम, बस तेरे दर से ।
दया का हाथ रहे, इस दास के सर पे ।।

जब भी मैं हारा, आके कन्हाई मेरी, लाज बचाई,
दुख की घड़ी में, पोंछ के आँसु मेरी, लाज बचाई,
दया तूने मोपे, मेरे श्याम, दिखाई मेरी, लाज बचाई ।।

गर्दिश में अपनों ने, मुखड़ा जो मोड़ा,
तुने ही थामा मेरा हाथ न छोड़ा,
कसके यु तुने मेरी, पकड़ी कलाई ।।
मेरी लाज बचाईऽऽऽ ।। १ ।।

भूल ना पाऊँ मेरा गुजरा जमाना,
तूने शरण में बाबा, दिया था ठिकाना,
जीवन जीऊँ मैं कैसे, कला ये सिखाई ।।
मेरी लाज बचाईऽऽऽ ।। २ ।।

गिन भी न पाऊँ दानी, उपकार तेरे,
दुखड़े मिटाये तूने हर बार मेरे,
मोर की छड़ी मेरे, सिर पे घुमाई ।।
मेरी लाज बचाईऽऽऽ ।। ३ ।।

शब्दों में कर ना पाऊँ, शुकराना तेरा,
आँसु ये ''हर्ष'' के है नजराना तेरा,
आँसुओं पे मेरे तूने, दया जो दिखाई ।।
मेरी लाज बचाईऽऽऽ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : किसी की नैया का माझी..)

जरा सा तु झुक जा, ये हाथ पकड़ लेगा,
भगती में अपनी, तुझे जकड़ लेगा,
तेरे पल पल की प्यारे, मेरा श्याम खबर लेगा ।। टेर ।।

हाल तु अपना, आकर सुनाना,
राज ना कोई, दिल का छुपाना,
फिर तेरी दुआओं का, बाबा पे असर होगा ।। १ ।।

चाहे तो दुश्मन, सन्मुख खड़ा हो,
घात लगाने की, जिद पे अड़ा हो,
तुझे छूने से पहले, ये उसको रगड़ देगा ।। २ ।।

मतलब के सारे, नाते यहाँ पर,
चल देंगे पल में, हाथ छुड़ा कर,
हर हाल में सांवरिया, तेरा हम सफर होगा ।। ३ ।।

श्याम शरण ही, मंजिल है तेरी,
बैठा क्या सोचे, काहे की देरी,
ऐ ''हर्ष'' तेरा इनके, चरणों में बसर होगा ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जी लेगें सरकार तेरी सरकारी में...)

जीवन भर गुणगान दिवाने गायेगें,
हम हर ग्यारस को श्याम की ज्योत जगायेंगें ।। टेर ।।

ज्योत जगाते, ही आ जाते, ऐसा देव कहां देखा,
मस्ती में झूमे हैं सारे, लगे अखाड़ा भगतों का,
भजनों की मस्ती में हम खो जायेगें ।। १ ।।

ग्यारस की इस, ज्योत में भगतों, श्याम का नूर टपकता है,
भस्मी लगते, ही किस्मत का, बिगड़ा लेख संवरता है,
माथे पर बाबा की भष्म लगायेगें ।। २ ।।

कोई गाये, कोई बजाये, कोई ढुमके लगाता है,
अपने अपने, ढंग से सेवक, श्याम धणी को रिझाता है,
श्रद्धा के फूलों की भेंट चढ़ायेगें ।। ३ ।।

''हर्ष'' कहे ये, लीला धारी, हर किर्तन में आते हैं,
भगतों का ये, भाव देख के, मंद मंद मुस्काते हैं,
भावों की गंगा में डुबकी लगायेगें ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : भूल बिसर मत जाना रे कन्हैया...)

तारणहारे पार करो ना,
अधमी का उद्धार करो ना ।। टेर ।।

श्याम सम्भालो बहक गया हूँ,
पाप की लौ में दहक रहा हूँ,
याचक को इन्कार करो ना ।।
तारणहारे पार...।। १ ।।

पातक हर है नाम तुम्हारा,
नाथ हरो सब पाप हमारा,
गणिका सम उपकार करो ना ।।
तारणहारे पार...।। २ ।।

मैं इक प्राणी तुम परमेश्वर,
हाथ दया का रखदो सिर पर,
''हर्ष'' मुझे स्वीकार करो ना ।।
तारणहारे पार...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : अँखियों के झरोखों से...)

तेरी ऊँची अटारी है, मेरी छोटी सी झोंपड़ी,
घनश्याम चले आओ, मेरा मान बढ़ा जाओ,
तू महलों का वासी है, मेरा कुटिया में वास है,
घनश्याम चले आओ, मेरा मान बढ़ा जाओ ।। टेर ।।

करमा ने तुझको सांवरे जिद से बुला लिया,
परदे की आड़ में प्रभु खीचड़ ही खा लिया,
वो प्रेम सुदामा सा, मुझको भी तो दिखलाओ ।।
घनश्याम चले आओ...।। १ ।।

बंधकर के प्रेम डोर से प्रेमी के आ गये,
प्रेमी के हाथ से प्रभु छिलके चबा गये,
मैं शबरी ना बन पाया, तुम रघुवर बन जाओ ।।
घनश्याम चले आओ...।। २ ।।

जब घर में मेरे आपके ये चरण पड़ेगें,
आँखों से ''हर्ष'' प्रेम के ये आंसु ढ़लेगें,
तेरे चरण मैं धोऊँगा, उन अँसुओं से सांवरे ।।
घनश्याम चले आओ...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तुझे भूलना तो चाहा लेकिन भुला न पाया...)

तेरी चाहतों ने बाबा, कितना मुझे रुलाया,
कोशिश हजार कर ली, तुमको भुला न पाया ।। टेर ।।

साँची लगन लगी है, चरणों की श्याम तेरे,
साँसो पे नाम तेरा, हर भाव नाम तेरे,
जब भी जुबां खुली तो, तेरा ही नाम आया ।। १ ।।

तेरी याद में दिवाना, मैं बन के घूमता हूँ,
हर गाँव हर गली में, मैं तुमको ढूँढ़ता हूँ,
हर चीज मिल गयी है, लेकिन तुझे न पाया ।। २ ।।

तेरे ''हर्ष'' को दयालु, पागल कहे जमाना,
तानों की चोट दिल पे, खाये तेरा दिवाना,
हर हाल में तु रखना, मेरे सिर पे तेरा साया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तेरा जोगी आया...)

तेरे द्वारे आया -२
तु डालदे नजरें प्यार की,
मिल जाये दया सरकार की ।। टेर ।।

एक तमन्ना-२, लेके दानी, तेरे दर पे आया,
आज मुझे मिल जाये मेरे, सर पे तेरा साया,
तेरा नाम मैं सुनके आया,
चरणों में शीश झुकाया ।।
तेरे द्वारे आया ...।। १ ।।

श्याम दिवाने-२, भांत भांत की, आशा लेकर आये,
झोली भरती देखी हमने, तुझको देख ना पाये,
टूटा दिल लेकर आया,
तुझे सारा हाल सुनाया ।।
तेरे द्वारे आया ...।। २ ।।

आज अगर मैं -२, खाली लौटा, हो बदनामी तेरी,
''हर्ष'' दिवाना पूछ रहा है, अब काहे की देरी,
मुझे गम ने खूब तपाया,
करदे किरपा की छाया ।।
तेरे द्वारे आया...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : कोई हम दम ना रहा...)

तूही हमदम है मेरा, तूही सहारा है मेरा,
मेरा चंदा है तूही, तूही सितारा है मेरा ।। टेर ।।

श्याम हमराही तू है, मेरी तो मंजिल तू ही,
तू मेरी नाव का माँझी, तू किनारा है मेरा ।।
तूही हमदम है...।। १ ।।

दूर नजरों से न हो, जी ना सकुंगा बाबा,
तू मेरा दिल का सुकुं, तू गुजारा है मेरा ।।
तूही हमदम है...।। २ ।।

मुझको ले जाओ जहाँ, वहीं चला जाऊँगा,
मैं तेरी डोर हुँ बाबा, तू इशारा है मेरा ।।
तूही हमदम है...।। ३ ।।

''हर्ष'' रुसवाई तेरी, सह ना सकेगा लेकिन,
तू मेरा चाँद का टुकड़ा, तू ही तारा है मेरा ।।
तूही हमदम है...।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मीठे रस सु...)

थारी मोर की छड़ी को फटकारो लागे,
म्हाने साँवरो सलुणों जादूगारो लागो ।। टेर ।।

मकाराणे की श्याम हवेली, जैंकी शान निराली,
वीर बली हनुमान करे है, आठोयाम रुखाली,
बाबा घड़ी घड़ी नाम को जय कारो लागे ।।
म्हाने साँवरो ....।। १ ।।

मंदिर में बड़तां ही सेवक, सुध सारी बिसरावे,
केवल थारे स्यामी देखे, आंसुड़ा ढ़लकावे,
जाणु म्हारे स्यामी बैठ्यो मायत म्हारो लागे ।।
म्हाने साँवरो ....।। २ ।।

मोर मुकुट में हीरो चमके, बागो घेर घुमेरो,
''हर्ष'' यु लागे बाबो बोले, तु मेरो मैं तेरो,
बाबो हारयोड़ा भगत को सहारो लागे ।।
म्हाने साँवरो ....।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : घडलो थाम ले...)

थारे सोवणे मुकुट में किंलगी सोवे,
होले होले मुल्को, म्हारो मन मोवे ।। टेर ।।

मोर छड़ी थारे हाथां में लहरावे,
कोई भगतां रा कानुड़ा या पाप धोवे ।।
होले होले मुल्को...।। १ ।।

श्याम सलुणा थारी झाँकी मन भाई,
कोई निरखणियों तो सारी सुध-बुध खोवे ।।
होले होले मुल्को...।। २ ।।

लाख हटाऊं कान्हा निजरां हटे ना,
कोई कालजिये में मीठी मीठी पीड़ होवे ।।
होले होले मुल्को...।। ३ ।।

''हर्ष'' भगत थारी लेवे है बलैया,
कोई घर म्हारे आज्यो थारी बाट जोवे ।।
होले होले मुल्को...।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ये गोटेदार लहगां...)

दरदी को मिले दवाई, ये वो दरबार है,
पल भर में करे सुणाई, ये वो सरकार है ।। टेर ।।

जग के ठुकराये बंदे तु, ''श्याम शरण में आजा''-२
तुमको गला लगायेगा ये, ''कलयुग का राजा''-२
हारे का साथ निभाये, ये वो सरदार है ।।
पल भर में...।। १ ।।

रोना नहीं पड़ेगा तुमको, ''इसके सन्मुख रो ले''-२
तेरा पल में बन जायेगा, ''बस इसका तु हो ले''-२
मनचाहा मिल जायेगा, ये वो भण्डार है ।।
पल भर में...।। २ ।।

कहने की दरकार नहीं है, ''आँखे ये पढ़ लेता''-२
''हर्ष'' भगत के मन की इच्छा, ''पूरी ये कर देता''-२
कण कण में वास है जिनका, ये वो करतार है ।।
पल भर में...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : सारे शहर में आपसा कोई नहीं...)

दिलो - जिगर - जां साँवरे, तेरे हुए तेरे हुए,
हमें खबर ना साँवरे, तेरे हुए तेरे हुए ।। टेर ।।

मेरा दिल जिसने चुराया, वो सांवलिये सरकार हो तुम,
दीनों के नाथ हो तुम, दातारी हो दिलदार हो तुम,
ऐ दयालु तेरे जैसा कोई नहीं,
तेरे होते आँखें ये रोई नहीं,
ये क्या किया तूने ये क्या किया -२
मैं हुँ तेरा तुम सांवरे, मेरे हुए मेरे हुए ।। १ ।।

कैसे करुँ बया मैं, तुने क्या क्या किया मेरी खातिर,
जब भी पड़ी जरुरत, एक पल में हुआ श्याम हाजिर,
तेरे चरणों में बाबा मेरा वास है,
ये क्या कम है कन्हैया मेरे साथ है,
जैसे तू चाहे वैसे रहूँ -२
दर पे तुम्हारे सांवरे, डेरे हुए डेरे हुए ।। २ ।।

बाबा तेरे दिवाने, तेरी किरपा की चाहत हैं रखते,
यादों में तेरी रहते, वो तो दिन-रात सोते या उठते,
''हर्ष'' गाता है साँवलशा नग्मे तेरे,
मेरा दिल ना रहा आज वश में मेरे,
दिल ले गया तू दिल ले गया-२
वश में सलोने साँवरे, तेरे हुए तेरे हुए ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तुमने किसी की जान को जाते हुए देखा है..)

दीनों के घर अमीर को, आते हुए देखा क्या,
वो देखो घर गरीब के, मेरा श्याम आ गया है ।। टेर ।।

ना जाने किस जनम की, सुनली मेरी दुआयें,
पल पल सलोने श्याम की, लेता हुँ मैं बलायें,
जनमों का अब दिवाना-२, मुझको बना गया है ।।
वो देखो घर गरीब के...।। १ ।।

आलम हमारे घर का, मदहोश हो चुका है,
हर इक दिवाना श्याम का, अब होश खो चुका है,
पागल हमें बना कर-२, वो मुस्कुरा रहा है ।।
वो देखो घर गरीब के...।। २ ।।

जाने न देगें सांवरे, कुछ पल तो रोक लेगें,
सजदा करेगें आपका, चरणों में धोक देगें,
इस ''हर्ष'' की दयालु-२, इज्जत बढ़ा गया है ।।
वो देखो घर गरीब के...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : इक बनजारा गाये...)

धुन अलबेली गाऊँ, जीवन संगीत सुनाऊँ,
चरणों में खाटुवाले के, श्रद्धा सुमन चढ़ाऊँ ।। टेर ।।

दयालु देखो, दिवाना आया, लबों पे तेरे, तराने लाया
दया से तेरी, जुदा ना कोई, सभी को मैं ये, बताने आया,
भावों के मोती चुन चुन के तुझको भेंट चढ़ाऊँ ।।
धुन अलबेली...।। १ ।।

भगत को तेरे, जो दुखड़े सताये, दयालु दानी, तु देख न पाये,
सहारा बनके, ओ लीले वाले, तुं नंगे पैरों, ही दौड़ के आये,
हारे का रखवारा तु है दुनिया को बतलाऊँ ।।
धुन अलबेली...।। २ ।।

जो तुझसे सीखा, जो तुमसे पाया, उसी को मैंने, सदा अपनाया,
प्रेमीजन के, तु संग में रहता, हमेशा दाता, तु बनके साया,
''हर्ष'' तुम्हारे श्री चरणों में लख लख शीश नवाऊँ ।।
धुन अलबेली...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(स्वरबद्ध : श्री प्रवीण बेदी -मो०-९८३०४३२६६९)

नैनों में बस गई है, श्याम तस्वीर तेरी,
दिल मेरा हो गया है, अब तो जागीर तेरी ।। टेर ।।

कैसा रिश्ता ये बोलो, कैसा नाता है अपना,
सांवरे नीन्दों में भी, देखुँ तेरा ही सपना,
क्युँ ना इतराऊँ तूने, लिख दी तकदीर मेरी ।।
नैनों में बस गई...।। १ ।।

रात दिन दूर था जो, हर घड़ी पास है वो,
बैठा पलकों पे मेरी, पर बड़ा खास है वो,
कस के बांधी है मैंने, तुमसे जंजीर मेरी ।।
नैनों में बस गई...।। २ ।।

''हर्ष'' क्युं पाल बैठा, सांवरे दर्द तेरा,
जिसकी कोई दवा ना, ऐसा है मर्ज तेरा,
पार दिल के हुई है, पैनी शमशीर तेरी ।।
नैनों में बस गई...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : दिल दिवाना बिन सजना के माने ना ...)

पागल मनवा श्याम तेरे बिन लागे ना,
दीवाना हुआ समझाने से समझे ना,
बाट निहारे, सांझ सबेरे, दिन-रैना,
दीवाना हुआ समझाने से समझे ना ।। टेर ।।

दुनिया चाहे, धन और दौलत, मैं तो चाहुँ दर्शन,
श्याम सलोने किया है मैंने, तन-मन तुझको अर्पण,
तेरे सिवा दिल अब तो कुछ भी चाहे ना ।।
दीवाना हुआ... ।। १ ।।

जी तो चाहे, पंख लगाकर, उड़के खाटू आऊँ,
कभी ना वापस, लौटू बाबा, चरणों में रम जाऊँ,
श्याम शरण में अब तो मुझको ही रहना ।।
दीवाना हुआ... ।। २ ।।

दिलवालों के, दिल की बाते, दिलवाले ही जाने,
''हर्ष'' तुम्हारे हो गये हम तो, जनमों के दिवाने,
इसके अलावा, और तुम्हे कुछ, ना कहना ।।
दीवाना हुआ... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(स्वरबद्ध : श्री प्रवीण बेदी -मो०-९८३०४३२६६९)

फागण में खाटू ''ले चाल रसिया''-२
सांवरो सलूणो हेलो मारे,
हेलो मारे सांवरो... ।। टेर ।।

रंग रंगीलो, फागण आयो,
जावण तांई जी ललचायो,
मैं तो ढ़ोला प्यारा जास्युँऽऽऽ
मैं तो ढ़ालो प्यारा-३, जास्युँ इब ''सागे थारे''-२ ।।
सांवरो सलूणो...।। १ ।।

श्याम धणी के पैदल चालो,
हाथां में निशान उठाल्यो,
थे तो ढ़ोला प्यारा हालो ऽऽऽ
थे तो ढ़ोला प्यारा -३, हालो ''भगतां रे लारे''-२ ।।
सांवरो सलूणो...।। २ ।।

भीड़ बड़ी खाटू में भारी,
''हर्ष'' उमड़गी ड़ दुनिया सारी,
यो तो ढ़ोला प्यारा बाबो ऽऽऽ
यो तो ढ़ोला प्यारा-३, बाबो ''सगला ने तारे''-२ ।।
सांवरो सलूणो...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बीते हुए लमहों की कसक...)

बाबा तेरे विरहा की कसक, साथ रहेगी,
आँखों में जुदाई की ये बरसात रहेगी ।। टेर ।।

मूरत ये तेरी दिल में बसाये हुए रखी,
हृदय में करीने से सजाये हुए रखी,
सांसों में कन्हैया की महक साथ रहेगी ।।
बाबा तेरे विरहा...।। १ ।।

यादों के नगीनों को जड़ाये हुए बैठे,
आँखों में हसीं सपने सजाये हुए बैठे,
हर वक्त कन्हैया की चमक साथ रहेगी ।।
बाबा तेरे विरहा...।। २ ।।

इस लौ को मेरे मन में जलाये हुए रखना,
इस ताप में सेवक को तपाये हुए रखना,
ऐ 'हर्ष' कन्हैया की दमक साथ रहेगी ।।
बाबा तेरे विरहा...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मेरे हाथों में नौ नौ चुड़ियाँ हैं..)

बोलो किसने सजाया तुझे आज सांवरे,
काला टीका लगाया तुझे आज सांवरे,
कि बनड़ा सा, बनाया है, तुझे आज सांवरे ।। टेर ।।

मोटी मोटी ये काली काली आँखे हैं,
लागे जैसे ये सन्तरे की फाँके है,
इशारों से, लगे मानो, करे ये बाते हैं ।।
मोटी-मोटी ...।। १ ।।

सोहे पेचे में सोणी सी किलंगी है,
तेरा बागा तो बाबा पचरंगी है,
तेरी चितवन, बड़ी प्यारी, बड़ी ही चंगी है ।।
सोहे पेचे ...।। २ ।।

माला गले में मोतियों जड़ी तेरे,
सोहे हाथों में मोर की छड़ी तेरे,
लगी होठों, पे बांसुरिया, सजे बड़ी तेरे ।।
माला गले...।। ३ ।।

मेरी कान्हा से आँखे आज चार हो गई,
''हर्ष'' खुशियों की देखो बौछार हो गई,
पड़ी सूनी, सी बगिया ये, मेरी गुलजार हो गई ।।
मेरी कान्हा ...।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(स्वरबद्ध : श्री प्रवीण बेदी -मो॰-९८३०४३२६६९)

भटक्योड़ो दास आज अरजी लगावे,
सुणल्यो हे नाथ थाने कदस्युँ बुलावे ।। टेर ।।

भटक गयो हूँ, नाथ सम्भालो,
बीच भँवर सुं, आज निकालो,
बिन थारे आज म्हाने कुण तो बचावे ।।
भटक्योड़ो दास...।। १ ।।

दुखड़ा रा बादल, सिर पर छाया,
पीछो ना छोड़े, लाख छुड़ायाँ,
कड़ कड़ आज म्हाने बिजली डरावे ।।
भटक्योड़ो दास...।। २ ।।

सुणल्यो मिजाजी, टेर लगाई,
''हर्ष'' भगत की, थाने दुहाई,
अरजी ने सुणके तु क्युं नहीं आवे ।।
भटक्योड़ो दास...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बरसां सुँ यो दिन आयो...)

भगतो सन्देशा ल्याया, न्यूतो देवण न आया,
उत्सव बाबा को आयो, आईज्यो ...ओ भगतो ...।। टेर ।।

खाटू को राजा भगतो, ''उत्सव में आसी जी'' -२
भगतां को आके बाबो, ''मान बढ़ासी जी''-२
रलमिल के सगला आया, थांसु या अरज लगाया,
भाई बन्धु ने सागे ल्याईज्यो...ओ भगतो...।। १ ।।

कीर्तन में नाचो गाओ, ''खुशियाँ मनाओ जी''-२
बाबा की महिमा गाओ, ''श्याम रिझाओ जी''-२
उत्सव में बाबो आया, आके दरबार लगाया,
बाबा की महिमा मिलके गाईज्यो...ओ भगतो...।। २ ।।

श्याम शरण में थारी, ''होसी सुणाई जी''-२
बाट उड़िकां आओ, ''पलकां बिछाई जी''-२
बाबा को भोग बणाया, जीमण ने आज बुलाया,
रुच रुच परसादी ''हर्ष'' खाईज्यो....ओ भगतो ..।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : इक दिन बिक जायेगा...)

भावों से होता है, भजनों का मोल,
ठाकुर को भाते हैं, मीठे मीठे बोल,
होठों पे लेकर के, भाव भरे नगमें,
दिल से तू महिमा गा, और मस्ती में डोल ।। टेर ।।

भाव का भूखा इसको भाव ही भाये,
भाव से बन्दे क्युँ ना भजन सुनाये,
भावों का है प्यासा, भजनों की अभिलाषा,
फिर क्युँ ना सांवरिये के भजनों को गाये, दिवाने..
भजनों की धारा से श्री चरणों को धो,
अपनी किस्मत के फिर दरवाजे तू खोल ।। १ ।।

भावों ने श्याम प्रभु को खींच बुलाया,
भाव के बंधन में ये बंधके आया,
ये डोरी छूटे ना, ये बंधन टूटे ना,
भगतों ये भाव तुम्हारे पढ़ने को आया, दिवाने..
सर को झुकाले तू चरणों में इकबार,
तेरी सुनेगा ये दिल की बातें बोल ।। २ ।।

भाव ही भव सागर से पार उतारे,
भाव ही श्याम मिलन का जरिया प्यारे,
मैं तेरा तू मेरा, जो मेरा वो तेरा,
भाव ये ही दिल में लेकर आजा तू द्वारे, दिवाने..
''हर्ष'' मिटादे फिर खुद की हस्ती को,
पूछेगा सांवरिया तेरी रजा क्या बोल ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : घर में हो तस्वीर तेरी...)

भोर भई जागो लल्ला,
मुंह धो लो करलो कुल्ला,
तेरा करुँगी श्रृंगार, होऽऽऽ-२
मैया करे है मनवार ।। टेर ।।

गंगा जल से कलश भरा है, आ तुझको नहला दुँ मैं,
सजा धजा कर काला टीका, तुझको आज लगा दुँ मैं,
पहनाऊँ हीरों का मैं हार ।। १ ।।

मेवे मिसरी माखन तुलसी, तुझको भोग लगाना है,
केशर वाला दूध सलोने, आजा तुझे पिलाना है,
टपकेगी टप टप लार ।। २ ।।

मखमल के आसन पर लाला, तुझको मैं बैठाऊँगी,
होले होले बड़े प्रेम से, झूला तुझे झुलाऊँगी,
निरखुँगी तोहे बार बार ।। ३ ।।

हीरे मोती जड़ी पागड़ी, शीश पे तुम धारण करना,
''हर्ष'' कहे मैया के अनुपम, सुख का तु कारण बनना,
जाऊँ मैं तोपे बलिहार ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : गुम है किसी के प्यार में...)

मुख में तुम्हारा नाम है, बस सुबह शाम,
पर कभी देख न पाया, मैं तुमको श्याम, मेरे श्याम ।।

तुमको समर्पित, मेरा ये तन मन,
इक दिन तो बाबा, देगा तु दर्शन,
तेरे सिवा ना, जीवन में कोई,
अखियाँ दिवानी, तुझमें ही खोई,
दिल तो बस गाये, तेरा तराना,
मैंने तो हरपल, लिया तेरा नाम ।। १ ।।

चाहा है तुमको, मानो ना मानो,
अपना दयालु, जानो ना जानो,
नैंनो में तेरे, कैसा नशा है,
पलकों में कान्हा, तुही बसा है,
चरणों का तेरे, हुआ दिवाना,
माला मैं फेरुँ, अब आठों याम ।। २ ।।

इतना किया है, इतना भी करना,
नस नस में मेरी, तेरा प्यार भरना,
नीन्दों में मेरी, सपनों में तु है,
प्रेमी तु मेरा, अपनों में तु है,
चौखट पे तेरी, मेरा ठिकाना,
''हर्ष'' पीया है, बस तेरा जाम ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : नीला आसमां सो गया...)

मेरा दिल यहाँ खो गया, होऽऽऽ ।। टेर ।।

सांवरे की याद आई, आँख भर आई,
जिन्दगी में बिन तेरे, कान्हा है तन्हाई,
क्युँ मुझसे आज रूठा है, क्युँ छुपके श्याम बैठा है ।।
मेरा दिल...।। १ ।।

एक पल देखा जो तुमको, दिल मेरा खोया,
दिन में मुझको चैन है ना, रातों में सोया,
सुहाने श्याम के सपने, लगा ये दिल मेरा बुनने ।।
मेरा दिल...।। २ ।।

प्रेमियों से दूर रहके, क्या सुकुं तुमको,
''हर्ष'' सांवरिये सताये, ये जुनुं हमको,
दिवाना दिल हुआ घायल, तुम्हारे नाम का पागल ।।
मेरा दिल...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : सुन रहा है ना तू...)

मेरी दुआयें सुन, दर्दी की आहें सुन,
कैसे बताऊँ क्यु मैं हारा हुँ सदायें सुन,
किस्मत का मारा हुँ, मैं दुखियारा हुँ,
अपनी पनाहो में ले आखिर तो तुम्हारा हुँ,
मुझसे क्युं फेरी है निगाहें sss
करदे क्षमा मेरी खतायें,
सुन रहा है ना क्या, कह रहा हुँ मैं -२ ।। टेर ।।

मैं कहाँ जाऊँ रे, सूझे ना रास्ते,
आजा तू आजा, सेवक के वास्ते,
ये मेरी गुजारिश है, तू मेरी जरुरत है ।।
मुझसे क्युँ फेरी है...।। १ ।।

वक्त से हारा हुँ, जाने क्या ये हुआ,
साँवरे आज तू, सुन ले मेरी दुआ,
तू मेरी इबादत है, तू मेरी हिफाजत है ।।
मुझसे क्युँ फेरी है...।। २ ।।

श्याम तू आयेगा, ये मुझको पूरा यंकी,
''हर्ष'' भी है तेरा, मानोगे तुम भी सही,
तुही मेरी चाहत है, तू मेरी महोब्बत है ।।
मुझसे क्युँ फेरी है...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मेरे यारां तेरे गम अगर पायेगें ...)

दोहा : इतनी किरपा बाबा कर दे ।
प्यार से मेरी झोली भर दे ।।

मेरे बाबा तेरा दर अगर पायेंगे,
हमें पूरा है यकीं हम, निखर जायेगें,
बस तेरा साथ हो, इतनी सौगात हो -२
जिन्दगी में संवर जायेंगे, हम तर जायेगें ।। टेर ।।

तेरे चरणों में दयालु, बीते अब तो उम्र सारी,
तेरी किरपा से कन्हैया, महके बगिया ये हमारी,
मेरे होठों पे हो हरदम, श्याम चर्चा अब तुम्हारी,
तेरा दर जो हमें, मिल गया साँवरे -२
हम तो खुशियों से भर जायेंगे, हम तर जायेगें ।। १।।

चाहे गम हो या खुशी हो, अब तो तेरा ही सहारा,
तेरे दम पे ही विधाता, मेरा चलता है गुजारा,
मैंने जब-जब चोट खाई, बाबा तुम को ही पुकारा,
मेरे सिर पे सदा, ये तेरा हाथ हो -२
हर बदी से उबर जायेंगे, हम तर जायेगें ।। २ ।।

मैं दीवाना हुँ तुम्हारा, दे दे चरणों में ठिकाना,
तेरी किरपा की ये दौलत, पाऊँ तेरा मैं खजाना,
बाबा मुझको याद रखना, चाहे भूले ये जमाना,
श्याम ना हो जुदा, ''हर्ष'' युं ही सदा -२
तेरी किरपा का वर पायेगे, हम तर जायेगें ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : चलो इक बार फिर से...)

मेरे सरकार अपनी, सेवा में मुझको लगा लो ना,
प्रभु रहमत का अपनी, आसरा मुझको जरा दो ना ।।

नहीं मांगु कोई दौलत, नहीं जागीर मैं तुमसे,
इशारा नेक नजरों का, मेरे सरकार दे दो ना,
न मेरे दिल में कोई, चाह महलों और मकानों की,
चरण में सांवरे अपने, मुझे अब वास दे दो ना ।।
मेरे सरकार अपनी...।। १ ।।

हमेशा साथ चलने की, जो झूठी कसमें खाते थे,
उन्होंने साथ जब छोड़ा, मैं तेरे द्वार आया हुँ,
बंधा हुँ डोर से तेरी, नजर भर देखले मुझको,
जमाने के सभी बंधन, लो अब मैं तोड़ आया हुँ ।।
मेरे सरकार अपनी...।। २ ।।

भगत की बात को तूने, सदा सम्मान से माना,
कन्हैया मानना होगा, तेरे इस ''हर्ष'' का कहना,
ये धागा सांसों का मेरी, खतम हो जिस जगह बाबा,
तमन्ना एक जीवन की, नजर के सामने रहना ।।
मेरे सरकार अपनी...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मेरे महबूब कयामत होगी...)

मेरे सरकार सहारा दे दे,
आज मुझको श्री चरणों में गुजारा दे दे,
तेरी नजरों में रहूँ हर पल मैं,
अपनी किरपा का मेरे श्याम इशारा दे दे ।। टेर ।।

तेरे तराने, गाता रहुँ, तेरी दया मैं, पाता रहुँ,
तेरा दिया ही खाता रहुँ,
अरजी है मेरी, मरजी है तेरी, तु रखे या बिसरा दे,
सिर पे बस हाथ तुम्हारा दे दे ।।
आज मुझको...।। १ ।।

दीनों के हो, नाथ प्रभु, रखलो मेरी भी, बात प्रभु,
थाम लो मेरा, हाथ प्रभु,
अब तूही बता, जाऊँ मैं कहाँ, ये पूछे है दिवाना,
अपनी सेवा का पिटारा दे दे ।।
आज मुझको...।। २ ।।

''हर्ष'' शरण में, आन पड़ा, अरजी पे देना, ध्यान जरा,
श्याम तू रखना, मान मेरा,
कमजोर पड़ी, कश्ति ये मेरी, इसे आके आज सम्भालो,
भटकी नैया को किनारा दे दे ।।
आज मुझको...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : कहीं दूर जब दिन ढ़ल जाये...)

मेरे श्याम मेरी, कुछ तो खबर ले,
इस निर्बल का, ''हाथ पकड़ ले''-२
मुझे डराते, दुनिया के साये,
इन बाहों में, ''आज जकड़ ले''-२ ।। टेर ।।

जिसे कभी, जब मैंने, अपना था जाना,
पल में ही देखा उसे, बनते बेगाना,
तुही तो अपना, श्याम ये करना,
गोद में अपनी, ''आज तु भर ले''-२ ।। १ ।।

कोई नहीं अब मेरे, साथ ओ दाता,
दिल की ये बातें बाबा, किसको सुनाता,
दया दिखादे, गले से लगाले,
आजा अब मेरे सारे, ''दुखड़े तु हर ले''-२ ।। २ ।।

दिल का ये, सारा तुझे, भेद बताया,
अपना बनाके मुझे, जग ने सताया,
करो ना देरी, अरजी पे मेरी,
''हर्ष'' जरा सा अब, ''ध्यान तु धर ले''-२।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मैं तेरे इश्क में ...)

मैं तेरी नजरों से दूर रह ना सकुं,
मुझको चरणों में रखले मेरे सांवरे,
तेरी तन्हाई मैं श्याम सह ना सकुं,
अपनी सेवा में रखले मेरे सांवरे ।। टेर ।।

ओढ़ी तेरी चुनरिया ओ कान्हा,
मुझे पागल समझता जमाना,
ओढुगां, मैं इसे, श्याम युं ही सदा ।।
मैं तेरी नजरों...।। १ ।।

मेरे जीवन का ये ही है मकसद,
सेवा करता रहुँ साँसें जब तक,
गाऊँगा, मैं तेरे, गीत युं ही सदा ।।
मैं तेरी नजरों...।। २ ।।

अपनी सेवा में मुझको लगालो,
अपने चरणों का चाकर बना लो,
पूजुगां, मैं तुझे, ''हर्ष'' युं ही सदा ।।
मैं तेरी नजरों...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ये धरती चांद सितारे...)

मैं घड़ी-घड़ी तुझको पुकारूँ, तेरी याद में वक्त गुजारूँ,
हर सांस से श्याम ऊचारूँ, तेरा पल पल रस्ता निहारूँ,
तुझे अपना बनाया, तुझे दिल में बसाया,
मेरे प्यारे सांवरे, तेरा मैं हो गया, तुझी में खो गया ।।

मेरे बरसते नैन ये, तरसे हैं तेरे दीद को,
आजा सलोने आ भी जा, दर्शन दिखा मुरीद को,
रस्ता उड़ीकु मैं तेरा, नजरें ना मुझसे युँ फिरा,
आँखों के मोती झर रहे, सूरत तेरी दिखा जरा,
तेरा जोगी बन आया, तेरा रोगी बन आया ।। मेरे प्यारे .... ।। १ ।।

प्रेमी जनों को क्या भला, तड़पाना अच्छी बात है,
घायल मोहे बना के क्या, मुस्काना अच्छी बात है,
तेरे विरह में जल रहा, ऐसे ना मुझको दे सजा,
मेरी तड़प पे सांवरे, आता है तुझको क्या मजा,
मोहे दर्श दिखादे, मेरी प्यास बुझा दे ।। मेरे प्यारे ... ।। २ ।।

देखो तुम्हारा ''हर्ष'' ये, आया है दुनिया छोड़ के,
अपने परायो से सभी, नाते व रिस्ते तोड़ के,
चोला तुम्हारे नाम का, पहना है मैंने देख ले,
जैसा भी हूँ मैं अब मुझे, बाबा जरा तू थामले,
तेरी शरण में आया, आके सर को झुकाया ।। मेरे प्यारे ... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(स्वरबद्ध : श्री प्रवीण बेदी -मो०-९८३०४३२६६९)

मैं तो तुमसे अरज गुजारुँ-२
युं तरसाओ ना कन्हैया, याद आओ ना ।। टेर ।।

याद में तेरी मेरे कान्हा, दिल का ये चैन गवांया,
नीन्द न आये अब तो मुझको, आँखों में तुही समाया,
चैन चुराओ ना, मदहोश बनाओ ना,
युं तो तरसाओ ना कन्हैया याद आओ ना ।। १ ।।

ख्वाबों में आने वाले, सचमुच दर्श दिखादो,
प्यासा इतना ना रखो, जन्मों की प्यास बुझा दो,
आँखे मटकाओ ना, थोड़ा मुस्काओ ना,
दर्शन दिखलाओ ना कन्हैया, याद आओ ना ।। २ ।।

''हर्ष'' दिलों का ये बंधन तो, तोड़े से ना टूटे,
साथ कभी भी प्रीतम का, छोड़े से ना छूटे,
हाथ छुड़ाओ ना, अब साथ निभाओ ना,
ऐसे इतराओ ना कन्हैया, याद आओ ना ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मैंने पूछा चांद से...)

मैंने पूछा श्याम से ओ सांवरे बता, तेरा ठौर है कहाँ,
श्याम ने कहा बंदगी हो जहां, वहाँ वहाँ वहाँ ।। टेर ।।

प्रेमियों के प्यार का हूँ प्यासा, आशिकों की आस्था का भूखा,
गर्व के मैं त्यागुं मेवे मिश्री, प्यार से मैं खाऊँ रुखा सूखा,
मैंने पूछा श्याम से ओ सांवरे बता, पाऊँ तुमको मैं कहाँ,
श्याम ने कहा सादगी हो जहाँ, वहाँ, वहाँ, वहाँ ।। १ ।।

भिलनी के मैं द्वार पे मिलूंगा, मीरा जी के प्यार में मिलूंगा,
नानी की पुकार में मिलूंगा, करमा की मनुवार में मिलूंगा,
मैंने पूछा श्याम से ओ सांवरे बता, तेरा वास है कहाँ,
श्याम ने कहा मेरा भक्त है जहाँ, वहाँ, वहाँ, वहाँ ।। २ ।।

भाव हैं जहाँ वही पे हूँ मैं, हो भजन जहाँ वहीं पे हूँ मैं,
''हर्ष'' सेवा की दिलों में जिनके, हो लगन जहाँ वहीं पे हूँ मैं,
मैंने पूछा श्याम से ओ सांवरे बता, ढूंढूं तुमको मैं कहाँ,
श्याम ने कहा घर विदुर सा हो जहाँ, वहाँ, वहाँ, वहाँ ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आ जाओ तड़पते हैं अरमां...)

यादों में बिलखते हैं बेटे,
अब श्याम सलोने आ जाओ,
दर्शन को तरसते हैं तेरे,
अब श्याम सलोने आ जाओ ।। टेर ।।

इन आँखों से मोती गिरने लगे,
भगतों की वफा का ''मान करो''-२
रोते को सुकुं मिल जाये जरा ।।
अब श्याम ....।। १ ।।

क्या बंदिश तुम्हारी है कोई,
ना आने की क्या है ''मजबूरी''-२
अहसान करो हम दीनों पर ।।
अब श्याम ...।। २ ।।

ये दूरी सही ना जाये प्रभु,
दीदार की खातिर ''जीते है हम''-२
मरने भी ना दे ये चाहत तेरी ।।
अब श्याम ...।। ३ ।।

जब चान्द सा मुखड़ा आये नजर,
बैचेन दिलों पे ''होगा असर''-२
ये ''हर्ष'' करे मनुहार तेरी ।।
अब श्याम ...।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ये दुनिया ये महफिल ...)

ये सांसे, ये धड़कन मेरे श्याम की हुई ।। टेर ।।

मिलने को बाबा श्याम, जिया बेकरार है,
जीना तुम्हारे बिन तो मुझे, नागवार है,
मैं लाख चाहुँ दाता तुझे भूलता नहीं,
प्यासी निगाहों को तेरा, इंतजार है ।। १ ।।

जब से नजर मिली ना खबर, आप की मिली,
मुझको सजा ये कैसी, तेरे प्यार की मिली,
विरहा में तेरे मेरा जियरा बड़ा उदास,
मुझको तो बस ललक तेरे, दीदार की लगी ।। २ ।।

ऐसे सताओं ना, दर्शन दिखाओ तो सही,
आखिर तुम्हारा हुँ, मुझको रुलाओ तो नहीं,
मैं तरसुं तेरे प्यार को, ठोकर मारुँ संसार को,
सब झूठे रिश्ते छोड़के, मैं ध्याऊँ कृष्ण मुरार को ।। ३ ।।

तेरी जुदाई में, आँसु बहाता हुँ सदा,
तुझको मनाता हुँ, तुझको बुलाता हुँ सदा,
अब सारे बंधन तोड़ के, मैं सारी रस्मे तोड़ के,
ये ''हर्ष'' शरण में आ गया, दुनिया से नाता तोड़के ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तेरे मेरे होठों पे मीठे मीठे गीत मितवा...)

रंगली चदरिया ये, आज मैंने श्याम रंग रे,
जन्मों जनम तक ना, सांवरे का रंग उतरे ।। टेर ।।

तन मन पे लिख डाला, नाम तेरा साँवरिया,
भावों से भर लीन्ही, मन की ये गागरिया,
श्याम-मय हो गया है, आज मेरा अंग अंग रे ।।
जन्मों जनम तक...।। १ ।।

जब तक है ये साँसे, प्रीत परवान चढ़ेगी,
हर पल जुबां मेरी, श्याम गुणगान करेगी,
अन्तिम समय में तु, रहना मेरे संग संग रे ।।
जन्मों जनम तक...।। २ ।।

देखो कभी छूटे ना, सांवरे ये साथ अपना,
झोली फैला करके, मांगता है ''हर्ष'' इतना,
तेरे आगे दातारी, देख मेरे हाथ पसरे ।।
जन्मों जनम तक...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : होठों पे सच्चाई रहती है...)

रोते भी हँसाये जाते हैं, जहाँ दर्द सभी के मिटते हैं,
हम उस देव के साथी है, जो काम अनोखा करते हैं ।।

जो हार के दर पे आया है, सीने से उसको लगाया है,
काया को कंचन कर देते, ''दरदी का रोग मिटाया है'' -२
हारे के साथी भगतों जो, दुनिया में कुहाया करते हैं ।।
हम उस देव ....।। १ ।।

तारीफ भला उस दानी की, कैसे मैं करुँ अल्फाज नहीं,
हर भूल क्षमा कर देता है, ''होता ये कभी नाराज नहीं''-२
जो बिन मांगे ही भगतों की, झोली खुशियों से भरते हैं ।।
हम उस देव ....।। २ ।।

ऐ ''हर्ष'' बहुत सीखा हमने, श्री श्याम को पहचाना हमने,
ये तन मन इसको अर्पण है, ''अपना इसको माना हमने''-२
जो बिन बोले ही भगतों की, दरपे सुनवाई करते हैं ।।
हम उस देव ....।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : क्या करते थे साजना तुम हमसे दूर ...)

रोते हैं अब सांवरे, हम तुमको याद करके,
नीन्दों, में भी दयालु, तुमको पुकारा करते हैं ।। टेर ।।

अपना बनाके, क्युँ कर भुलाया,
आँसु समझ के क्युँ, आँख से गिराया,
कोई, अपनों को कैसे, ऐसे बिसारा करते हैं ।। १ ।।

हर इक खुशी से, हम बड़ी दूर हैं,
जीने को जीते हैं, पर मजबूर हैं,
दिल के, दर्पण में बाबा, तुमको निहारा करते हैं ।। २ ।।

सुनो ना दयालु, हमारी ये आहें,
तुमसे बिछुड़के, हम कहाँ जायें,
हर इक, सांस से तेरा, नाम उचारा करते हैं ।। ३ ।।

''हर्ष'' सलोने, तेरी याद आई,
सहने न पायें, तुम्हारी जुदाई,
हम तो, अंसुओं से तेरे, चरण पखारा करते हैं ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(स्वरबद्ध : श्री प्रवीण बेदी -मो०-९८३०४३२६६९)

लखदातार, बेड़ा पार, करदो हमारा जी,
तेरा ही भरोसा बाबा, तेरा ही सहारा जी ।। टेर ।।

दीन दुखियों का श्याम, तुमसे गुजारा है,
हारे हुए प्राणियों को, आसरा तुम्हारा है,
भटके हुए को श्याम, देते हो किनारा जी ।। १ ।।

हक है हमारा बाबा, इसीलिये मांगते,
तेरा दर छोड़ के ना, दूजा दर जानते,
दीनानाथ, खाली हाथ, हमने पसारा जी ।। २ ।।

जिसने भी ध्याया उसे, तुने अपनाया है,
प्रेमियों के वास्ते तु, दौड़ा-दौड़ा आया है,
भगतों की कश्ति को, पल में उबारा जी ।। ३ ।।

आस तेरे भगतों की, टूटने न पाये जी,
''हर्ष'' की ये डोर प्रभु, छूटने न पाये जी,
बड़ा ही अनोखा है ये, बंधन हमारा जी ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : कुछ कहता है ये सावन...)

सब कुछ देता है दानी, क्या देता है ?
नजर न आये फिर भी झोली ''भर देता है''-२ ।। टेर ।।

वीरों में वीर अनोखा, कौन कुहाये ?
तीन वाण ले महाभारत जो ''लड़ने जाये''-२ ।। १ ।।

हारे का रखवारा, किसको कहते ?
हारे के जो साथ खड़ा, ''उसको ही कहते''-२ ।। २ ।।

माता को वचन दिया था, कैसे निभाया ?
श्री कृष्ण को शीश दान में ''देकर आया''-२ ।। ३ ।।

क्युं झुकती ये जगती, क्युं झुकती है ?
शरणागत की ''हर्ष'' यहाँ ''बिगड़ी बनती है''-२ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : हाय शरमाऊँ...)

सर को झुका दे, आके दुखड़े सुना दे,
तेरी बिगड़ी बना देगा,
ये बाबा मोरछड़ी वाला -२
दीन का है -२, ये रखवाला ।। टेर ।।

कलयुग का राजा, इसकी चौखट पे आजा,
भटके क्युं मारा मारा, किस्मत से ज्यादा पा जा,
देव है ये -२, जग से निराला ।। १ ।।

दर पे जो आया, इसकी जान गया माया,
भरता भगतों की झोली, जिसने जो माँगा पाया,
प्रेमियों को -२, इसने सम्भाला ।। २ ।।

करता क्युं देरी, बंदे क्या है मजबूरी,
बोले ''हर्ष'' शरण में आ, होगी हर आशा पूरी,
सांवरा है -२, बड़ा दिल वाला ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : चलो दिलदार चलो...)

सुनो दातार सुनो, श्याम सरकार सुनो,
मेरी मनवार सुनो ।। टेर ।।

हम अकेले हैं सम्भालो हमें तुम,
डूब जायें ना ''बचालो हमें तुम''-२ ।।
सुनो दातार सुनो...।। १ ।।

बंदगी खत्म ना होगी ये तेरी,
जिन्दगी खत्म भी ''हो जाये मेरी''-२ ।।
सुनो दातार सुनो...।। २ ।।

दर्श दिखलाओ दिवाने को अभी,
तोड़के ''हर्ष'' ये ''बंधन तु सभी''-२ ।।
सुनो दातार सुनो...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ऐसी मस्ती कहाँ मिलेगी...)

सेवादारो श्याम प्रभु का जैकारा लगवाना है,
श्याम का दर्शन पाना है ।। टेर ।।

मीलों दूर खड़े पंक्ति में, श्याम धणी के ये प्यारे,
आसमान में गूंज रहे हैं, सेठ श्याम के जैकारे,
धीरे-धीरे हर सेवक को, मंदिर तक पहुँचाना है ।। १ ।।

भीड़-भाड़ में हाथ छुड़ाकर, बच्चे अकसर खो जाते,
कुछ ऐसे हैं चलते-चलते, जो अचेत से हो जाते,
बिछुड़ गये हैं जो अपनों से, उनसे उन्हें मिलाना है ।। २ ।।

ऐसी करो व्यवस्था प्यारो, भगदड़ ना मचने पाये,
खुशी-खुशी सब भजन सुनाते, श्याम हवेली में जाये,
खुद भी नाचो संग में सारे, भगतों को नचवाना है ।। ३ ।।

घण्टों के इंतजार के पीछे, बाबा तक जो पहुँच गया,
सेवा का फल ना पायेगा, धक्का गर जो तूने दिया,
''हर्ष'' कहे रे हाथ जोड़कर आगे उन्हें बढ़ाना है ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : सबके रहते लगता है जैसे...)

सोते उठते, हर पल बाबा, ''नाम जपुं मैं तेरा''-२
चाहे जितनी रात हो लम्बी, चाहे सांझ सबेरा ।।
नाम जपुं मैं तेरा....।। टेर ।।

मुझको दुनिया ने बिसराया, तूने ही दिया सहारा,
अपने बन गये बेगाने तो, बन गया श्याम हमारा,
मेरे हृदय में सांवलिये, अब है तेरा बसेरा ।।
नाम जपुँ मैं तेरा... ।। १ ।।

रोम रोम तेरा है बाबा, तुझसे ही चलती सांसे,
तेरी जुदाई सह नहीं पाऊँ, राह निरखती आँखे,
नैया रुपी इस जीवन का, मांझी श्याम है मेरा ।।
नाम जपुँ मैं तेरा... ।। २ ।।

जग की ठोकर खाके आया, आखिर मैं तेरे द्वारे,
तू चाहे तो गले लगा ले, या फिर श्याम बिसारे,
''हर्ष'' मेरी मंजिल है तुही, तुही ठिकाना मेरा ।।
नाम जपुँ मैं तेरा... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : कभी ना कभी कहीं ना कहीं ...)

श्याम बता, तेरे सिवा, कौन मुझे अपनायेगा,
अपने गले लगायेगा, सिर पे हाथ फिरायेगा ।। टेर ।।

किसी ने मेरी बात सुनी ना, ना मुझको अपनाया है,
जिसको दिल का दर्द सुनाया, उसने ही ठुकराया है,
दुनिया ने बिसराया मुझको, तू ही पास बिठायेगा ।। १ ।।

आस लगाये बैठा हुँ मैं, मेरी ओर निहारो तुम,
नादानी में भूल हुई है, बिगड़ी बात सुधारो तुम,
श्याम अकेला छोड़ ना देना, बेटा कहाँ पे जायेगा ।। २।।

तुझसे ही उम्मीद लगी है, तुझपे दारमदार है,
''हर्ष'' सम्भालो खाटू वाले, कश्ति ये मझधार है,
मुझे भरोसा तेरा बाबा, तु ही पार लगायेगा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : हम तो चले परदेश...)

श्याम बसे परदेश, क्युँ परदेशी हो गया,
दूर तुम्हारा देश, क्युँ परदेशी हो गया ।। टेर ।।

ओ कान्हा रिश्ता ये अपना, जनमों पुराना, जनमों पुराना,
अब तक मेरी सुध ना लीन्ही बन बैठा बेगाना,
लगा के दिल पे ठेस, क्युँ परदेशी हो गया ।। १ ।।

कैसे मैं आऊँ तेरी नगरिया, हाल बुरा है, हाल बुरा है,
लेकिन बाबा तुं भी मुझको क्युँ भूला बिसरा है,
सिमरुँ तुम्हें हमेश, क्युँ परदेशी हो गया ।। २ ।।

जनमों से मैं दास हुँ तेरा, भूल न जाना, भूल न जाना,
कभी कभी तो खैर खबर इस बेटे की ले जाना,
अरजी यही विशेष, क्युँ परदेशी हो गया ।। ३ ।।

''हर्ष'' तेरे दर्शन को तरसे, खाटु बुलाले, खाटु बुलाले,
श्री चरणों में खाटुवाले मुझको आज बिठाले,
भेजूं यही संदेश, क्युँ परदेशी हो गया ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मेरा जीवन कुछ काम न आया....)

श्याम सम्भालो, गिर ना जाऊँ,
हाथ पसारे, तुझको बुलाऊँ ।। टेर ।।

बिछड़ गये रे अपने, तनहा अकेला मोहे छोड़ा,
बेदर्द जग ने बाबा, आज ये दिल मेरा तोड़ा,
होऽऽ हर इक ठिकाना छूटा, तेरा ठिकाना तज के,
मैं कहाँ जाऊँ ऽऽ.. श्याम सम्भालो ...।। १ ।।

निर्बल को खाटूवाले, आ के तू दे दे सहारा,
आखिर दयालू मैंने, हार के तुमको पुकारा,
होऽऽ तेरे ही रहते बाबा, जग में अकेला कैसे,
मैं कहलाऊँ.. श्याम सम्भालो ...।। २ ।।

तुझसे ही अब तो दानी, आस कि डोर बंधी है,
''हर्ष'' कि लाठी बाबा, क्यूं कमजोर पड़ी है,
होऽऽ आके पकड़लो बाहें, भव-सागर से बाबा,
मैं तर जाऊँ.. श्याम सम्भालो ...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : सौ साल पहले मुझे ...)

हमको तो खाटुवाले, ''तेरे दर से प्यार है''-२
आज भी है और कल भी रहेगा,
दर्शन को तेरे बाबा, ''जिया बेकरार है''-२
आज भी है और कल भी रहेगा ।। टेर ।।

तेरा दर्शन पाने को, दिवाने-दिलदार मचल जाते हैं,
तेरे विरहा में आँसु, मेरे सरकार निकल जाते हैं,
प्यासी नजर को बाबा, ''तेरा इन्तजार है''-२
आज भी है और कल भी रहेगा ।। १ ।।

इस दिल पे लिख डाला, दयालु-बस नाम तुम्हारा है,
मेरे रोम रोम में तुम, श्वाँस में श्याम हमारा है,
धड़कन पे मेरी बाबा, ''तेरा इख्तियार है''-२
आज भी है और कल भी रहेगा ।। २ ।।

मेरे जीवन धन हो श्याम, मेरा आधार तुम्ही तो हो,
मेरे सब कुछ दीनानाथ, मेरा संसार तुम्ही तो हो,
''हर्ष'' तेरे बिन बाबा, ''जीना दुश्वार है''-२
आज भी है और कल भी रहेगा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : हर किसी को नहीं मिलता...)

हर किसी को कहां मिलता, तेरा प्यार खाटू वाले,
खुश नसीब हूँ मैं मुझको ये मिला, दरबार खाटू वाले ।।

होठों से बात भले ना हो, होती है बात निगाहों से,
भक्तों को काबू कर लेते,
''इन जादू भरी अदाओं से''-२।।
हर किसी को...।। १ ।।

वरदान की कैसी चाह उसे, जिसे प्यार मिला तेरा बाबा,
अरमान ना कुछ भी पाने का,
''जब पाया सपनों से ज्यादा''-२ ।।
हर किसी को...।। २ ।।

जीवन का ये ही मकसद है, ये ''हर्ष'' सदा पूजेगा तुझे,
हर हाल में तेरे गुण गाऊँ,
''जैसे भी तू रखेगा मुझे''-२ ।।
हर किसी को...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बचपन की मोहब्बत...)

हे श्याम सुना है तू, दीनों का सहारा है,
तेरे होते हुए बाबा, ये दीन क्युँ हारा है ।। टेर ।।

कुछ ठेकेदारों ने, हक तुझपे जताया है,
जागीर तुझे अपनी, मेरे श्याम बनाया है,
वो मूर्ख क्या जाने, तू भक्तों का प्यारा है ।। १ ।।

वो जीत गये अपनी, माया के दम खम पे,
मैं हार गया उनकी, चाँदी की चमाचम से,
हे दीनबंधु तू तो, हारे का सहारा है ।। २ ।।

उनको जो दिया इतना, सद्बुद्धि भी देते,
किसी दीन हीन की वो, इज्जत तो ना लेते,
मैंने शर्मसार होकर, तेरा नाम पुकारा है ।। ३ ।।

दुर्योधन क्या तुझको, महलों में बुला पाया,
तू साग विदुर के घऱ, खाने को चला आया,
कहे ''हर्ष'' तुझे भाये, भावों का पिटारा है ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : कहीं दीप जले कहीं दिल...)

श्री श्याम जपो हर पल,
जरा देख ले ध्याकर दिवानेSSS
तेरे काम बने पल पल ।। टेर ।।

ये महामन्त्र उपकारी, ये देव बड़ा बलकारी,
ये नाम बड़ा निर्मल ।।
श्री श्याम जपो...।। १ ।।

सोते उठते दोहराओ, साँसों में श्याम बसाओ,
कोई काम नहीं मुश्किल ।।
श्री श्याम जपो...।। २ ।।

कारज करने से पहले, श्री श्याम का नाम सुमरले,
हर बार रहेगा सफल ।।
श्री श्याम जपो...।। ३ ।।

ऐ ''हर्ष'' तु इतना करना, इनकी राहों पर चलना,
हारे का बनो सम्बल ।।
श्री श्याम जपो...।। ४ ।।

श्री श्याम जी की आरती

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय ।।

रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे ।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ जय ।।

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।। ॐ जय ।।

मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ जय ।।

झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे ।
भक्त आरती गावे, जय-जय कार करे ।। ॐ जय ।।

जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे ।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे ।। ॐ जय ।।

श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत ''आलूसिंह'' स्वामी, मनवाछिंत फल पावे ।। ॐ जय ।।

जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ।। ॐ जय ।।

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रधुनाथ कला की ।।

जांके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष भय निकट न झांपे ।।

अंजनी पुत्र महा बलदायी, संतन के प्रभू सदा सहाई ।।

दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ।।

लंका-सी कोट समुद्र-सी खाई,जात पवनसुत बार न लाई ।।

लंका जारी असुर सब मारे, सियाराम जी के काज सँवारे ।।

लक्ष्मण मुर्छित पड़े धरणी पर, आन संजिवन प्राण उबारे ।।

पैठी पाताल तोरि यमकातर, अहिरावण की भुजा उखारे ।।

बाँये भुजा सब असुर संहारे, दाहिने भुजा सब संत उबारे ।।

सुरनर मुनिजन आरती उतारे, जै जै जै हनुमानजी उचारे ।।

कंचन थाल कपूर की बाती, आरती करत अञ्जनी माई ।।

जो हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ परम पद पावे ।।

लंक विध्वंस किये रघुराई, तुलसी दास स्वामी कीरति गाई ।।